

“इरादों की आग, जीत का रास्ता”

संकल्प

कैलाश शुणा



BlueRoseONE.com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Kailash Rana 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



BlueRoseONE
Stories Matter
New Delhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS

www.BlueRoseONE.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-510-6

Cover design: Anuj

Typesetting: Simran

First Edition: October 2026

परिचय

कैलाश राणा जन्म स्थान सदाफर, थाना व प्रखंड मयूरहंड, जिला चतरा, झारखंड, पत्नी मंजू राणा, माता स्व० इन्द्राणी देवी, पिता स्व० दरबारी राणा, दादी स्व० टूकनी देवी एवं दादा स्व० प्रदुमन राणा। जन्म चार फरवरी 1961.

प्राथमिक शिक्षा-पाँचवीं तक गाँव में ही आजीवन अविवाहित विकलांग शिक्षक द्वारा छद्मी कक्षा में बेसिक स्कूल बच्चों में दाखिला परन्तु कुछ ही महीने बाद मिडिल स्कूल पाण्डेय बारा में स्थानान्तरण। KBSS हाई स्कूल चौपारण से 1978 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण।

उच्च शिक्षा- जगन्नाथ जैन कॉलेज, झुमरी तिलैया से 1980 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण, इसी कॉलेज में अर्थशास्त्र स्नातक प्रतिष्ठा में नामांकन परन्तु राजा शिव प्रसाद कॉलेज, झरिया में स्थानांतरण और स्नातक प्रतिष्ठा की परीक्षा 1982 में उत्तीर्ण।

संत कोलम्बस कॉलेज P.G. center हजारीबाग, रांची विश्व विद्यालय में M. A. अर्थशास्त्र में दाखिला और सत्र विलम्ब के कारण 1987 में परिणाम घोषित और डिग्री हासिल।

कार्य काल- भद्रकाली कॉलेज इटखोरी में संस्थापक व्याख्याता के तौर पर सेवा प्रारम्भ तथा ओरमांझी कॉलेज रांची में व्याख्याता पद पर नियुक्ति और अल्पकालीन सेवा। जे० जे० कॉलेज झुमरी तिलैया में तदर्थ के रूप में 1989 से सेवा प्रारम्भ, इसी बीच झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज में नियुक्ति और सेवा शुरू।

इन्दिरा गाँधी खुला विश्वविद्यालय सेंटर जे० जे० कॉलेज झुमरी तिलैया, कोडरमा में काउंसलर के रूप में सेवा

4 फरवरी 2026 को सेवा निवृत्त परन्तु सेवा विस्तार के आधार पर झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज में सेवारत.

रूचि- समाज सेवा और राजनीति, झारखंड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के तहत 2010 में जिला परिषद मयूरहंड

चतरा से सदस्य के रूप में चुनाव में भागीदारी परन्तु पठन-पाठन में प्रबल रूचि के कारण निरंतर शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न। समाज सेवा के क्षेत्र में भारत विकास परिषद एक राष्ट्र स्तरीय सामाजिक संगठन के तहत झुमरी तिलैया शाखा के दो बार सचिव, एक बार अध्यक्ष के दायित्व का बाखूबी निर्वहन, वर्तमान में उत्तर झारखण्ड प्रान्त के उपाध्यक्ष के दायित्व के निर्वहन तथा अन्य सामाजिक संगठनों में सक्रिय।

रचनाएँ- अगस्त 2000 में झुमरी तिलैया एकेडमिक टाइम्स नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ जिसका सम्पादक मुझे बनाया गया, हालाँकि कतिपय कारणों से इस पत्रिका का प्रकाशन स्थगित हो गया।

2023 में राव-मनमोहन मॉडल ऑफ़ इकोनोमिक ग्रोथ नामक लेख भंडारकर ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट पुणे द्वारा प्रकाशित पत्रिका में छपा। 18 फरवरी 2025 में ब्लूरोज पब्लिशर दिल्ली द्वारा 'लगान' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।

प्रस्तावना

ऋषि मुनियों की तपो भूमि और ज्ञान के सागर में गोताखोरों ने अमर कथाओं की रचना कर समाज को सराबोर किया। रामायण आदर्श को चर्मोत्कर्ष पर तो महाभारत कूटनीति को पराकाष्ठा पर पहुँचाया जबकि गीता का ज्ञान आँखें खोला।

देश में संघर्ष होते रहे। कभी धर्म-अधर्म को लेकर, कभी सत्ता को लेकर, तो कभी गुलामी और आजादी को लेकर देश को कठिन दौर से गुजरते रहना पड़ा। भारत कभी विश्व गुरु था जो नहीं रह पाया, कारण तो आत्म मंथन का विषय है।

विदेशियों का आगमन हुआ, देश में वे जड़ जमाये, स्थानीय खून में घुल-मिल गए और देश की संपत्ति पर कब्जा जमाया। स्थानीय छूत और वे मालिक हो गए। जातिगत भेद-भाव का जहर घोला। मूल निवासी गर्त में ठेल दिए गए। समाज के मुख्य धारा से मूल निवासी दूर हो गए, सामाजिक सुध-बुद्ध खो बैठे। विदेशियों का सारा कब्जा हो गया।

मौका देखकर मुगलों का आक्रमण हुआ, देश पर कब्जा जमाया। देश पर पूर्व से कब्जाधारी मुगलों के हितैषी हो गए, यहाँ तक की उनसे वैवाहिक सम्बन्ध कायम किया। आपसी क्रिया-प्रतिक्रिया का शिकार भी होते रहना पड़ा परन्तु सत्ता की चापलूसी में डूबे रहे। मूल निवासी और विदेशियों की चमड़ी का रंग अलग दिखना स्वाभाविक हो गया।

कालान्तर में डच, पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अंग्रेज आये, आपस में टकराये लेकिन अंग्रेजों के सामने टिक नहीं पाए। अंग्रेज अपना पैठ जमा लिए, मुगलों पर काबू किये और देश अपने हाथ कर लिए। चापलूस अंग्रेजों के साथ उसी प्रकार घुल-मिल गए जिस प्रकार मुगलों के साथ मिल कर अपना वर्चस्व बनाये रखे। प्रभुत्व सम्पन्न वर्ग अंग्रेजों से मिलकर मूल निवासियों पर और अधिक कहर बरपाया। समाज के मुख्य धारा से काफी दूर रखा, इस वर्ग में उत्पन्न

ज्ञानियों को उभरने से प्रताड़ित किया गया। इनकी रचनाओं को सार्वजनिक तक होने नहीं दिया बल्कि अपनी ही रचनाओं में सम्मिलित कर दिखलाया गया। वंचित समाज उचित-अनुचित के मर्म से अनभिज्ञ रहा। अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो की नीति चापलूसों के खून में समा गई। इनकी चमड़ी का रंग पहले से भिन्न था ही अब और अधिक हो गया।

अंग्रेजों की कुनीति देशवासियों को प्रभावित की और अंग्रेजों से मुक्ति की चाहत जन्म ली। अंग्रेजों का विरोध शुरू हो गया, लेकिन शुरू करने वाले प्रभावकारी नहीं हो पाए जितना होना चाहिए। प्रभावपूर्ण विरोध तब शुरू हुआ जब एक असाधारण मानव के रूप में प्रतिभाशाली नायक सत्य और अहिंसा के पुजारी के रूप में प्रकट हुआ। आन्दोलन हिंसात्मक रूप भी लेता रहा, परन्तु अहिंसात्मक रूप सर्वव्यापी बनता चला गया।

राम को रावण पर हिंसात्मक प्रहार करना पड़ा लेकिन आन्दोलन के नायक के अहिंसात्मक प्रहार से ही अंग्रेजों को भागना पड़ गया।

समाज से अलग-थलग एवं प्रताड़ित वर्ग अहिंसात्मक आन्दोलन से दूर नहीं रह पाया, इन्हें भी जागना पड़ा और ये व्यापक रूप से उठ खड़े हुए लेकिन यह वर्ग इतना घृणित एवं प्रताड़ित था की श्रृष्टि कर्ता ने इनके लिए अपना रहबर पैदा कर दिया और जिस प्रकार कुम्हार के आवा में मिट्टी का बर्तन पक कर निकलता है उसी प्रकार प्रताड़ित एवं वंचित वर्ग के आवा में यह भी पक कर निकला। विद्रोह की दुनिया में एक सितारा बन कर उभरा जिसे देश के साथ-साथ अपनों को भी आजाद कराना था। देश की आजादी से कहीं कई गुणा अधिक जरूरी गर्त में जीने वालों को आजाद कराना था।

परन्तु आजादी के इन दोनों नायकों में से एक के जिम्मे देश आगे और समाज पीछे था, जबकि दूसरे के जिम्मे समाज आगे और देश पीछे था, जिस पर दोनों में मतभेद होना स्वाभाविक था। इस बीच प्रभुत्वधारी गण

सम्प्रदायिकता की आग धधकाने में जुटा रहा। काफी मशक्कत के बाद देश आखिर आजाद हो गया भले ही इसे बंटना पड़ा।

अब इन दोनों नायकों के जिम्मे घृणित, वंचित, एवं शोषित वर्ग को आजाद कराना रह गया। गीता के परम ज्ञानी बापू 'हरिजन' शब्द की व्युत्पत्ति कर

पाखंडियों की आँखों पर चढ़ चुका था तो भारतीय संविधान जैसी महान रचना बेमन से ही सही कानूनविद् एवं प्रखर अर्थशास्त्री बाबा साहब के जिम्मे सौंपना पड़ा, भला राम राज्य की कल्पना और अच्छूतोद्धार की संकल्पना पाखंडियों के खून में आग लगा दिया और हथ्र के तौर पर अहिंसा के पुजारी को हिंसा का भेंट चढ़ना पड़ गया।

भारतीय संविधान के शिल्पकार सर्वांगीण विकाश एवं कल्याण का प्रावधान किया ही, सामाजिक न्याय का भी यथोचित प्रावधान किया जिसमें मानवता पर एक तरफा कब्जा नियंत्रित हो और प्रताड़ित जीवों को राहत की साँस मिल सके, जो एक बार फिर महासंग्राम का बीजारोपण हो गया। एक तरफ वर्चस्व को बचाने की चुनौती तो दूसरे तरफ समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित एवं सम्मान जनक स्थान पाकर वंचित वर्ग द्वारा राष्ट्र और समाज के कुशल और सफल संचालन की चुनौती कायम हो गई।

कैलाश राणा

दो शब्द

देश और समाज विकट परिस्थिति से गुजर रहा है। अस्तित्व की रक्षा सर्वोपरी हो चुकी है। सभ्यता और संस्कृति के जिस सांचे में समाज को ढाला गया तथा भेद-भाव का जहर घोला गया उस पर कड़ा प्रहार है। समाज में हलचल और परिवर्तन की लहर है।

निसंदेह वंचित, शोषित और पीड़ित वर्ग जाग उठा है, हक और अधिकार के प्रति सजग हो चुका है। भेद-भाव मिटे और समानता कायम हो, संघर्ष जारी है, भले पाखंड सीना तान कर खड़ा है। टकराहट चुनौती बन कर उभरी है। परम्परावादी सोच सत्य की ओर लौटने और मिथक अहंकार त्यागने को कतय तैयार नहीं है। एकता और अखंडता संकट में है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति के नियम ही जीवन के मूल आधार हैं। समाज में परिवर्तन होते रहे हैं इसके लिए कुर्बानियाँ भी दी गयी हैं। एक बार फिर वह नौबत दस्तक देने को तैयार दिख रही हैं। मानस पटल पर हाहाकार मचा हुआ है।

समय-समय पर असधारण मानव धरती पर अवतार लेते रहे हैं और राहें निकलती रही हैं। प्रकृति की गति कभी रूकती नहीं, इतिहास अपने को दुहराता है। समाज में झूठे अहंकार त्याग कर सामाजिक सौहार्द पैदा करने की पुनरावृत्ति की सम्भावनाएं प्रबल होंगी इसके पहले दुष्परिणामों से गुजरना होगा।

लेखनी जब-जब दम दिखलाई है परिस्थितियाँ करवट ली हैं। अपने अन्दर उत्पन्न हलचल को प्रवाहित होने से रोक नहीं सका, टूटी-फूटी भाषा में ही सही कविताओं की सृजनात्मक जिज्ञासा प्रवाहित करने का मार्ग ढूँढ पाया। यह कार्य घर के एक-एक सदस्य के सहयोग और त्याग के बिना कतय सम्भव नहीं था। इस कार्य हेतु अपने ढेर सारे सुभ चिंतकों के प्रति हृदय तल से आभार एवं कृतज्ञता प्रगट करता हूँ।

कैलाश राणा

सूची

चाहत	1
जननायक कर्पूरी	4
मण्डल मसीहा.....	6
चमन	8
दशरथ मांझी.....	10
सृष्टि के नायक.....	13
भावुकता	16
प्रतिकार	18
हुंकार.....	20
प्रजातंत्र	23
जमाना	27
दुखी जीवन	29
चमत्कार.....	31
एकता का ढोंग	34
वक्त की पुकार.....	37
अग्रदूत.....	39
हिन्दुस्तान	43
देहात के बच्चे	46
मनमोहन.....	49
निष्ठावान.....	51
नन्हें बच्चे	56

मनोरथ	58
दादी-नानी	60
जुगनू	62
प्यार में पागल	64
असली राज	67
नीतू	69
अजूबा मानव	71
गुरू मिटने वाला है !	73
आलस्य	75
गरीबी	77
जवान	80
बेटी	82
मथुरा-काशी	85
नेतृत्व	87
मुल्क	89
नया जमाना	91
दो दिल	92
दिल दरिया	94
कसक	96
त्राहिमाम	98
कोरोना	99
सितम ढह गया	100
मांझी रे मांझी	102
भ्रष्टाचार	104

अटल	107
प्रियदर्शनी	109
राजीव.....	111
आया कौन जमाना	113
तिलमिलाहट	115
सडकें	119
लालू को महान कहना होगा.....	122
पेंशन	124
विध्वंश	127
संदेश	130
कैसा रचाया ढोंग !	133
विदाई की बेला	136
आविष्कार	138
भारत देश महान है	140
अंबेडकर	142
हमला	145
संकल्प.....	148
मोम और बात्ती	151
जुदाई.....	153
राष्ट्र धर्म.....	156
पाखण्ड	159
दिशोम गुरु	162
रहस्य.....	165
जवानी	168

कब्जा	171
गौतम बाबू	176
सास-बहू	179
बापू	180
तडपन बेशुमार है	183

चाहत

कूद जाऊंगा पर्वत से,
तुम थाम्ह लेना मुझे।
कोटी-कोटी नमन है,
समर्पित चरणों में तुझे।

तन गिर जायेगा,
होश उड़ जायेगा।
रोक लेना मुझे,
लगाम बन के।

भीतर-भीतर तो चुर हूँ,
उभर पाऊं कैसे।
बाधाएं लाख डटें हैं,
कैसे लाँघ पाऊँ उसे।

क्षितिज पर छा जाने को,
चाहत तो अपार है मुझे।
तुम बिन पुरा हो कैसे,
कहाँ हो दूँदू तो दूँदू तुझे।

झाँकता हूँ चहुँओर,
अँधेरा ही अँधेरा है।
भला कृपा हो जाय तेरी,
तब तो सवेरा ही सवेरा है।

बिन जोखिम मिले तो कैसे,
पाना चाहता हूँ जिसे।
दम लगाऊंगा हरदम,
मानूंगा नहीं लेकर उस से कमा।

लडूंगा हवा के झोंके से,
अडूंगा तो तूफानों से।
मिट जाऊंगा तो मिट जाऊंगा,
टकराऊंगा चट्टानों से।

देख लेना वो क्षण,
जब सज उठेगा रण।
चलेगा बाण पर बाण,
ध्वस्त हो जायेगा निर्माण।

मत पूछो, मैं हूँ कौन,
बता दूंगा हो जाओगे मौन।
जैसे हूँ, रहने दो मुझे,
करो न छेड़-छाड़, बचने दो मुझे।

बार-बार संकल्प दोहराने को,
है नहीं असली राज बताने को।
देख लेना जयघोष होगा जब,
कौन है टिक पायेगा तब।

वक्त की झंकार है,
भीतर में अंगार है।
जब तक है दबा पड़ा,
फूटने का इंतजार है।

उछल-कूद जब कर पाऊँगा,
जब आग में तब कूद जाऊँगा।
कौन होगा रोक लेगा,
असली राज बतलाऊँगा।

जननायक कर्पूरी

मैट्रिक के इम्तिहान में,
कर्पूरी जब प्रथम आया।

हुआ गदगद गोकुल ठाकुर,
सामन्त से मुलाकात किया।

व्यक्त किया उदगार अपना,
कर्पूरी को साथ लिया।

सामन्त भला क्या जाने,
उज्ज्वल भविष्य का सौगात लाया।

सामन्ती से बाज कैसे,
कर्पूरी से पैर दबवाया।

सोचा था कुछ और गोकुल,
कुटिलता का उपहार पाया।

भला कर्पूरी था क्या,
कैसे जाने पास आया।

बदला वक्त, सिंहासन पाया,
गलत मंशा पर प्रहार किया।

यह आरक्षण कहाँ से आयी,
कर्पूरिया की माय बियायी।

कर्पूरी कर पूरा,
छोड़ गद्दी धर अस्तूरा।

जननायक कहलाने वाले
भारत रत्न का हकदार हुआ

कर्पूरी के जो साथ चले,
कुछ यहाँ गिरे कुछ वहाँ गिरे।

मण्डल मसीहा

शरद तेरी यही कहानी,
सरल स्वाभाव मधुर वाणी।

सामाजिक न्याय का ताना-बाना,
गोलबन्द करने को ठाना।

संसद को सुशोभित किया,
ईमानदारी का दीप जलाया।

अन्धविश्वास को दूर भगाया,
पाखण्ड पर कड़ा प्रहार किया।

कडे विरोध का घुंटा पीया,
पिछड़ों का है राह दिखाया।

स्वाभिमान से जीने वाला,
विज्ञान छोड़ राजनीत को पाला।

जिसने तुम से टकराया,
है सभी मुंह को खाया।

देश का नेता कैसा हो,
शरद बाबू जैसा हो।

निकल पड़ी थी वो जवानी,
थी मरने मिटने को ठानी।

वाजिब हक के विरोधी,
मयानों से तलवारें खिंची।

आखिर शरद था नाम जिनका,
भरा हुंकार जाग उठा मन का।

निकली थी सड़कों पर टोली,
जब सुन लिया शरद की बोली।

शरद का कोई जोड़ नहीं,
सही मार्ग का तोड़ नहीं।

पथ प्रदर्शक बन कर जिया,
अपने से नीचे को सम्मान दिया।

मध्य प्रदेश था जन्म लिया,
यु०पी० बिहार भी जीत लिया।

राजनीति का स्तर उठाया,
राज्य छोड़ देश को जिया।

जन-जन का मसीहा बन कर,
पीछे कभी देखा न मुडकर।

जितना कहूँ कम है शानी,
शरद तेरी यही कहानी।

चमन

हुआ विध्वंस जग में,
एक नहीं वह बारम्बार।
लिया सबक, है किसने?
जब, अब भी है तैयार।

परिणाम का है घड़ी देखा,
पर क्या रुक सकेगा धोखा?
दहल उठेगी दुनिया जब,
फिर से उजड़ेगा चमन अनोखा।

सम्हल जाऊं, पर सोच नहीं,
अनहोनी का कोई लोच नहीं।
है कोई, जो अब भी समझे?
रोक ले, न कोई उलझे।

वतन के रखवाले बनकर,
प्रगट हो सिने को तानकर।
चरण चुमेगा सकल उनका,
जब रोक सकेगा ढाल बनकर।

इंच-इंच और पाई-पाई,
इसी की तो है लड़ाई।
पर समझ सके इसे न कोई,
आखिर जो भी है, उसे भी खोई।

दोष-निर्दोष का है फर्क क्या,
समझे कौन है, खुद क्या।
मिट्टी में मिल जायेगा, पर,
क्या, सही खुद सोच पायेगा !

दशरथ मांझी

सौभाग्य समय पर साथ दिया,
पर्वत पुरुष का दीदार किया।
था सुना नाम जिनका,
सन्मुख साक्षात्कार किया।

था अति भोला-भाला,
पर था वो मतवाला।
प्रेम पत्नी से सबने किया,
पर, क्या कोई दशरथ सा जिया?

उड़ा फाल्गुनी का प्राण पखेरू,
दशरथ सोचा अब क्या करूँ !
नहीं छोड़ूंगा मन में ठाना,
लिया हाथ, छेनी और घाना।

तुझे अब न छोड़ूंगा,
जब तक तुझे न तोड़ूंगा।
प्रण जब मैंने ठाना है,
सबक तुम्हें सिखाना है।

फाल्गुनी को तुम छीना है,
उसके बिना क्या जीना है।
दम पर दम लगाऊंगा,
तुझे तोड़ कर पथ बनाऊंगा।

चाहे तुम हो लाख अडिग,
देख लो अब मुझसे भीडा
तूने कभी न सोचा होगा,
मुझसे न कोई ऊँचा होगा।

प्रेम पथ बनाना है, और,
दशरथ नगर बसाना है।
देने वाले मिले अनेक,
पर मैंने माँगा केवल एक।

मेरे जीवन का वो क्षण,
मिलकर हुआ गद-गद मना।
दशरथ नहीं मिशाल था,
पर्वत से भी विशाल था।

झुमरी तिलैया ब्लॉक मैदान,
आयोजित था चुनाव अभियान।
रामविलास था आने वाला,
भरी थी भीड़ पेलम-पेला।

सहसा मुझसे एक बालक बोला,
देखो वह जो घूम रहा अकेला।
कांध में है कागजों का थैला,
दिखा रहा था खुलम-खुला।

सुनकर मैंने उसे बुलवाया,
मिलकर उससे भेद खुलवाया।
वो था कोई और नहीं,
दशरथ था जो नाम सही।

बोला, छोड़ा नहीं किसी से मिलना,
हो नहीं सका था इनसे मिलना-जुलना।
मिला मौका तो फिर क्या कहना,
चुका आज तो फिर दूर पड़ेगा जाना।

मैंने सोचा, तनिक देर किये बिना,
बैठवा दिया मंच पर, था जहाँ ठिकाना।
मंच पर देखा उसे पासवान,
लिया साथ उड़ चला विमान।

धन-धान्य हुआ मेरा जीवन,
पाकर दशरथ सा रतन।
कभी भूल सकूँगा न वो क्षण,
जब तक रहेगा यह कायम तन।

सृष्टि के नायक

सृजनशीलता ज्ञान प्रबल है,
कौन कहता तुम निर्बल है।
अरे झांक लो इतिहास पुराना,
तुमरे बिन कौन सबल है।

निर्माण में सम्मान ढूँढ,
और नहीं तो अरमान ढूँढ।
देव हो या दानव,
तीर-धनुष और कमान ढूँढ।

वीर भला, वो है कौन,
तुम बिन बैठा है जो मौन।
जब धरा हाथ तेरा सामान,
तब कूद पड़ा है मैदान।

तुम्हरे बिन है वीर कैसा,
जो घूमता-फिरता फ़क़ीर जैसा।
जब तक तूने सृजा नहीं,
कहाँ पाता वो तीर जैसा।

कहाँ कोई प्रशिक्षण तेरा,
जन्म से है हुनर का डेरा।
पढ़ कर है जो गढ़ने वाले,
गढ़ दिया सब पढ़ने लगे।

चाहे रथ हो या विमान,
सृजा तूने अग्नि बाण।
लंका पुरी का निर्माण,
द्वारकापुरी बसे भगवान।

रामायण हो या महाभारत,
तुम बिन है सब अकारथा।
कृष्ण भला हो या राम,
तुम्हारे बिन सब नकाम।

सुदामा के मित्र धनवान,
जहाँ पहुँचे बांधे अरमान।
कृष्ण भला थे भगवान,
किये विश्वकर्मा का आह्वान।

हे स्वर्ग निर्माता जग विधाता,
मेरे ही जैसा हो घर मकान।
सुदामा भला विलख कर लौटे,
देखा कुटिया पर आलीशान !

विचारों का है आकार दिया,
साज-सज्जा से साकार किया।
जहाँ तू नहीं है वहाँ निराकार,
जब खोला आँख, मचा हाहाकार।

शक्ति पुंज निहित है तुम में,
अस्तित्व का डेरा है तुम में।
जब – जब करवट फेरा है,
वीरों को मिला सहारा है।

ओर-छोर है तुम में,
अनंत रूप तुम्हारा है।
इंच-इंच, पाई-पाई,
तूने सभी सम्हारा है।

भावुकता

अनायास रो पड़ता हूँ,
मर्द नहीं, कायर बन जाता हूँ।
पर वो दिल क्या जो दिल नहीं,
भावुक होकर भी पिघल नहीं पाता हूँ।

कस्तूरबा जल रही थी,
चिता पर सोई सोई।
गाँधी भला कह गये,
आज हिमालय हिल गया।

भावों की तरलता, भला,
किस पात्र में रख पाता।
प्रकृति का नियम शाश्वत,
प्रेम बन्धन जब टूट जाता।

राम सहित सभी पुत्र प्यारे,
मात-पिता के परम दुलारे।
वन गमन टल न सका,
विलख पड़े सारे के सारे।

राजा दशरथ परम ज्ञानी,
अब न रहूँगा प्रण जो ठानी।
विवश राम, अटल निर्णय,
रोक न सका कोई होनी-जानी।

आखिर दशरथ सुरधाम पधारे,
लाख है राम, राम पुकारे।
विलख उठे भरत, भैया के प्यारे,
माता का कोई न दशा सुधारे।

प्रतिकार

हाहाकार मचा है चारों ओर,
अब न सहेंगे पोरे – पोरा।
मानव को है जिसने लाया,
नहीं किसी से है भेद किया।

पर शोषक शोषण में विभोर,
गरज उठा अब शोषित घनघोरा।
सहना क्या, कट मर जाना है,
नाप लो कौन कितना मरदाना है।

लाख वतन पर मिटने वाले,
छू न सके भीतर के काले।
छल – प्रपंच से भरे निराले,
ऊपर – ऊपर भोले – भाले।

धिक्कार उठा भीतर मन अब,
अब नहीं तो जागोगे कब।
सूरमाओं की है ललकार,
गरज उठा ले हाथ तलवारा।

मिट सके न वे मतवाले,
अब भी बैठे हैं मन में पाले।
देख लेंगे हैं कौन रखवाले,
हैं हम लुटेरे जिस्म के प्याले।

अबला नारी करे पुकार,
कब तक सहेंगे अत्याचार।
लो संकल्प है धिक्कार,
देर नहीं अब करो प्रतिकार।

हुंकार

कांप उठा भूमण्डल जब,
पाखण्ड का स्वाभिमान पला।
कांप उठी धरती तब,
शोषितों का अरमान जला।

जलती नारी करे पुकार,
कितना सहूँ अब अत्याचार।
नहीं किसी में है वो धार,
जो निकले हाथ में ले तलवार।

मन्दिर आज भी वर्जित है,
आखिर यह किससे सृजित है।
रचने वाले केवल एक,
तो, फिर हुए क्यों अनेक ?

जब—जब आफत आया है,
सूरमाओं को दहलाया है।
वीरों में है वीर अनेक,
पर क्या है उनमें एक।

वक्त है हुंकार उठा,
अब न पालो मन में कुंठा।
कब तक सहोगे झूठा पर झूठा,
करो न माफ़ वतन है लुटा।

है क्या विचारों से बड़ा,
पर गंदे विचारों से है मुल्क सड़ा।
सोचो, अब हो जाओ खड़ा,
अब देर नहीं, आफत है आन पड़ा।

एक हो जाओ शोर मचाओ,
गुहार लगाता फीर रहा।
वक्त था तो मस्त रहा,
अब आफत है तो रो रहा।

जिसकी जितनी है कुर्बानी,
लिखो इतिहास पूरी कहानी।
पुर्जा-पुर्जा खोल कर देखो,
थी किसमे कितनी मर्दानी।

ढोंग रचने वालों को जानो,
तह तक उन्हें खूब पहचानो।
तभी मार्ग खुल पायेगा,
नही तो अंत फिर पछताएगा।

लाख मुसिबत झेल रहा,
आफत तुम्हीं पर ठेल रहा।
कूद पड़ोगे मर मिटने,
पर, वो तो चुपके-चुपके मिल रहा।

एक नहीं है बारम्बार,
उठा तुझे है ललकार।
बिना समझे तुने ठाना,
पर क्या कभी उसे पहचाना ?

हलचल दुनिया सारी है,
रक्षा-रक्षा, रोदन पसारी है।
भूलो नहीं वो अत्याचारी है,
महायुद्ध की तैयारी है।

प्रजातंत्र

प्रजातंत्र को समझे कौन,
परिणाम देख हो जाते मौन।
हंसते वही, जीत पाते जौन,
रहस्य के बीच रहते मौन।

जन-जन में हैं पैठ बनाते,
वही दिल जीत पाते हैं।
लाख यत्न करने पर भी,
कहीं न कहीं चूक जाते हैं।

कुर्सी की लड़ाई टेढ़ी,
सीधे नहीं मिल पाती है।
तन-मन और धन लगाकर,
कल-बल-छल समझाती है।

पवित्र जितना है प्रजातंत्र,
भरे पड़े हैं उतने मंत्र।
राजा हो या रंक पावर एक समान,
तभी सोचते हैं मिलकर जनकल्याण।

जीत किसी की थाती नहीं,
हार नहीं सुहाती है।
हौसला जो बुलन्द रखते,
मौका फिर मिल जाती है।

चट्टानी एकता बुलंद हौसले,
जन—जन की गोलबंदी है।
पक्ष—विपक्ष के खेल में,
जनता खूब इठलाती है।

प्रजातंत्र अब कराह उठा,
जन—जन में व्याप्त बेईमानी है।
देश समाज सब लुट खाओ,
यही तो सब ने ठानी है।

तंत्र का है लक्ष्य कहाँ अब,
जाति—जाति है मांग रही जब।
पकड़ा धर्म पाखण्ड रचाया,
पापों का अब रथ सजाया।

घर—घर में अब नारा है,
सामन्तो को ललकारा है।
हक दो चाहे जैसे हो,
हमने भी देश सवारा है।

पाया कुर्सी मिला सम्मान,
भीतर-बाहर बढ़ा गुमान।
भूल बैठा पुन्य आत्मा को,
जिसने किया कुर्सी निर्माण।

जितना प्यारा तिरंगा है,
क्या मन उतना गंगा है ?
घर—घर सबने टांगा है,
मर्यादा से लिया उतना ही पंगा है।

नेतागिरी तप से कोई कम नहीं,
राष्ट्र के प्रति मिट जाय तो गम नहीं।
सम्पूर्ण सम्मान ही धर्म है,
ईमानदारी, परोपकार ही कर्म है।

प्रजातंत्र अब बचाना है,
मिलकर तिरंगा फहराना है।
राष्ट्र की रक्षा करना है,
दुनिया में प्रचम लहराना है।

जिसकी जितनी संख्या भारी,
उनकी उतनी हिस्सेदारी।
आखिर आई ऐसी क्यों बारी,
पच्चासी पर पन्द्रह की कब्जा सारी।

ऊँच-नीच का भेद है माना,
हम सब एक हैं कभी न जाना।
छल-प्रपंच का जाल बिछाना,
तभी तो केवल बचा बहाना।

सत्य अहिंसा के पुजारी,
कर गए उद्धार हमारी।
रग – रग में है भाव भरी,
करे तंत्र रक्षा हमारी।

संविधान है मूल आधार,
करता सबका बेड़ा पार।
नारी शक्ति अपरम्पार,
तभी तो मिला है अधिकार।

शोषित वंचित करे पुकार,
मन में उपजे प्रतिकार।
अब हमें तो दे दो सरकार,
तंत्र का बन्ूँगा हम पतवार।

जमाना

बेहद जमाना, सुखद संसार,
एक पर एक है आविष्कार।

मत पूछो किसने किया,
कहने को तो है सरकार।

भला ! जमाना आयेगा फिर,
लूट जायेगा जब घर परिवार।

करने वालों की त्याग तपस्या,
हो चली अब सब बेकार।

राजतंत्र तो छोड़ चूका सब,
प्रजातंत्र की है सरकार।

भला बुरा की बात कहाँ अब,
कहाँ मिलेगा वह संस्कार।

कौन सुनेगा है किसको दरकार,
आज यहाँ कल वहाँ यही तो है तकरार।

तन—मन—धन सब बेच रहा,
करने को केवल भ्रष्टाचार।

नये उमंग है नयी जवानी,
पाखंड की रच रही कहानी।

किसको कौन कब रोकेगा,
शर्म से मस्तक जब झुकेगा।

जात-जात सब टकरायेगा,
धर्म में जहर घुल जायेगा।

कल वंचित था आज भी है,
मिटेगा कैसे यही तो राज है।

बच्चा-बच्चा बोल रहा,
मन में है बिष अब घुल रहा।

भाई-भाई टकरायेंगे,
कुनीत का कहर बरपायेंगे।

चीर हरण का जब खेल होगा,
पापियों का तब मेल होगा।

इंच-इंच का माप होगा,
अमंड-घमंड का चाप होगा।

शील घटेगा लाज मिटेगी,
मिट जायेगा सब आधार।

दुखी जीवन

दुःख से भरा जीवन,
मांग रहा वरदान।
भूल-चुक कर दो माफ़,
अब तडप उठा है प्राण।

नही किसी से गिला शिकवा,
नही किसी का अपमान।
ढूँढ़ रहा हूँ कोना-कोना,
मिल रहा नहीं त्राण।

किस-किस रूप में पुकारूँ,
मिल रहा नहीं कोई नाम।
भटक-भटक कर रह गया,
मिला नहीं कोई धाम।

पुण्य-पाप की माप कहाँ,
खोजता रह गया जहाँ के तहाँ।
अब तो दे दो जीवन दान,
नही तो आ जायेगा फरमान।

अबला कहो या बलवान,
दुख के आगे सब हैवान।
क्या कहूँ सुख के आगे,
सब बेच दिया है ईमान।

तनिक नही समझ पाया मैंने,
जब पाल रखा था वो गुमान।
अब वैसा कर न सकूँ,
दे दो मुझे परम ज्ञान।

जीवन जैसा रत्न हमारा,
क्या कहूँ कितना है प्यारा।
पड़ा कष्ट में सिसक रहा,
काट न सकेगा बिन सहारा।

निकला वक्त पछता रहा अब,
बिन ढाढस अब मिलेगा कब।
सही राह पकड़ेंगे जब—जब,
निःसंदेह पार लगेगा तब—तब।

चमत्कार

उन्मुक्त गगन की छाया में,
भूगर्भ से उपजा एक महाना
हृदय स्थल के दल-दल में,
थिरक उठा सारा जहान।

प्रकृति की यह लीला है,
चाँद-सूर्य अम्बर में खिला है।
तारे टिम-टिमाते अनेक,
ध्रुवतारा है उनमें एका।

कौन कहता शुभकामनाओं में दम नहीं,
जग में जीनेवालों से पूछो।
शुभकर्म का फल हो मीठा,
तनिक तो कर के देखो।

खुशियों से है अंग-अंग भरा,
शायद यही फल था देना।
आभार प्रगट किसका-किसका करूँ,
तमाम है, फिर एक पर क्यों मरूँ ?

सत्य है जीवन का सब सार,
निसंकोच करो विश्वास अपार।
मिटे न मन का वो आधार,
जिस पर होगा बेडा पार।

गर्त में जीने वाले को भी,
कभी न कभी होता उद्धार।
पर, संतोषम्, सुखम बिन अपनाये,
कभी हो न सकेगा सुख-संचार।

मिट जायगा जीवन का अध्याय,
फिर क्या किसका है बौसाय।
होना है जो होकर रहेगा,
पर जो भी होगा, है उसमे सच्चाई।

जीवन चक्र चलता ही रहेगा,
दल-दल में फंसा पहिया निकलता ही रहेगा।
गति रुक सकेगी न कभी,
ऐसा सूत्र मिलता ही रहेगा।

भरौसा कर, मिटेगी अंधकार,
लाख मचा हो हाहाकार।
कौन है, जो है बेकार,
है नहीं कोई, यही तो है संसार।

थक गये रहस्य ढूँढ़ते-ढूँढ़ते,
पा न सका हौंढ़ते-हौंढ़ते।
यही तो असली राज है,
जिसपर सभी का नाज है।

सहसा मचल उठा मन मेरा,
सुना शुभ मिटा अँधेरा।
खुशियों से आंसू जल-धारा,
बह निकला, तन पखारा।

जुड़ गई पंक्ति इतिहास की,
मिटेगी नहीं कभी मिठास की।
जीवन भले क्षण भंगुर है,
पर है बड़े एहसास की।

एकता का ढोंग

दिल है अब धडक रहा,
धक-धक कर है मचल रहा।
जिसने कोई राग अलापा,
खो चूका है, अपनी आपा।

याद है इतिहास पुराना,
खोज रहा अब खुद को बचाना।
फिर एक बार है उसने ठाना,
बना कर नया-नया बहाना।

समझ रहा है सब कुछ वो,
पर ढूँढ रहा बचने का ठिकाना।
भला तार-तार किया है किसने,
मानव की छाह से रखा है दूर अपने।

इंसान को इंसान न समझा,
पाखंड के सिवा कुछ और न सुझा।
चला अब फिर से ढोंग रचाने,
दूसरों को फंसाकर खुद बचाने।

भला तरस रहा था मानव जब,
याद न आई भाई-चारा तब।
भेष बदल कर बात बनाने,
निकला है अब भेद मिटाने।

जिसके साथ है जुल्म किया,
ले हुकुमत हाथ में जिया।
हुवा असलियत उजागर जब,
तिल मिलाहट है मन में तब।

दिल है अब धडक रहा,
धक-धक कर है मचल रहा।
सूझ नहीं रहा अब कुछ,
बदला वक्त जब तरस रहा ।

क्या से क्या अब हो रहा,
पाखंड की गढ़री ढो रहा।
तभी तो चला राग अलापने,
मन में रख कर द्वेष पुराने।

जब-जब करवट बदला है,
छिप-छिपाकर सम्भला है।
अब भेष बदलकर निकला है,
समझा सबको पगला है।

तन गोरे मन काले हैं,
देखो बड़े निराले हैं।
कायरता है भरी पड़ी,
निकल पड़े मतवाले हैं।

है कोई जिसने जगाया,
भय का है अंधकार भगाया।
जागृति का संदेश लाया,
सिना तान कर है समझाया।

पाखंडी अब भयभीत निकला,
बच पाने का कुछ न मिला।
तभी धर्म का है रट लगाया,
अधर्मी भला है खुद सरमाया।

युग-युग में तरसाया है,
घीरा खुद अब फरमाया है।
एक रहोगे बच पावोगे,
अलग रहोगे कट जावोगे।

मंदिर को दूध से नहलाया है,
प्रभु का मन बहलाया है।
जिसने सबको सृजा है,
भला उसे भी पाखण्डी ब्रजा है।

आज भी दूर हैं मंदिर से,
टिक सकें कैसे सिन्दुर से।
मना, भला करे न कोई,
फिर है क्यों गंगा जल से धोई।

वक्त की पुकार

अंदर-अंदर अब खौल रहा,
प्रतिशोध की आग में है जल रहा।
सजेगा जब वो समर,
बरपेगा भूधरा पर तब कहर।

पश्चाताप भी नहीं तनिक सूझ रहा,
गलती को भी सही बुझ रहा !
अनहोनी का डंका बज रहा,
दिन भी रात में बदल रहा।

न्याय-अन्याय के तराजू में,
सत्य को तौलने वाले कौन।
नीति-नीयत को परखे जौन,
खुद को हो चले अब मौन।

संयोग है जैसा बन रहा,
भिड़ने का मन है ठन रहा।
कब तक सहते रहना है,
घूंट-घूंट कर जीने से अच्छा मरना है।

प्रकृति की लीला जारी,
कभी तुम्हारी कभी हमारी।
कभी तुम भारी, कभी हम भारी,
फिर देर क्यों जब है तैयारी।

एक नहीं है बारम्बार,
उथल-पुथल हुआ संसार।
फिर तो छिड़ा है तकरार,
है कौन? रोक लेगा संघार।

करवट फेरता अब जमाना,
बचा नहीं कोई बहाना।
अबला पर तो हो बलवान,
ले हाथ धनुष और बाण।

घूंट -घूंट कर जिया है,
शोषण का आंसू पीया है।
सुन रहा है वारिसान,
सहेंगे नहीं अब अपमान।

प्रकृति का नियम भला,
गरीब कभी तो होगा धनवान।
मनमानी जितना कर चुका,
अब पछताने से क्या होगा।

अग्रदूत

अलख जगाने वाले,
निकल पड़े बन मतवाले।
देखा न आगे न पीछे,
नाक के सिधे निकले।

राह बड़ी कंटीली है,
चाहे जितनी जहरीली है।
निकला है तो निकला है,
देखो गजब का काफिला है।

निशाना लक्ष्य को भेदना है,
सीखा, कभी नहीं मुंह मोड़ना है।
परबस चाहे जितना हों,
भरा आत्मबल का खजाना है।

आगे तो किसी को चलना होगा,
राह से तनिक न डिगना होगा।
भरा है असंतोष दिल के भीतर,
धर लिया तितकी तो फिर जलना होगा।

बहाना का बड़ा खजाना है,
आलस्य ही असली ठिकाना है।
अलख, जो सक्स जगा दे,
वही तो असली मर्दाना है।

शेर जब दहाड़ उठा,
पर्वत सा अड़ा हुआ।
गिदड़ भला भाग चला,
बाकी मिला सब पड़ा हुआ।

गूँज उठी धरती, अम्बर,
पुलकित हो सब रचा स्वयंवर।
गले में डाला, जय माला,
फिर जो उपजा, भीतर-भीतर।

शेर सा दहाड़ है, देखो,
सामने खड़ा पहाड़ है।
लग रहा ठान लिया मन में,
तैयार है कूदने अब रन में।

जिया पैरों का जूता बनकर,
पीया घूंट है सिसक-सिसका।
भला अब कौन रोक पायेगा,
जब मौत का फन्दा मिल जायेगा।

लग रहा ठिठोली अन्दर-अन्दर,
जब उफन पड़ा है समन्दर।
मधुरता का अब प्रदर्शन है,
खड़ा बन जब सुदर्शन है।

करो मुकाबला डटकर अब,
निकला हूँ पैगम्बर बनकर।
ढूँढ़ लो हौसला मेरे अन्दर,
सम्भलो, नहीं तो पछताओगे तब।

गणित है गुणा भाग का,
जोड़ घटाकर देख लो।
अब तक जो था रख लिया,
शुभ चाहो तो बाँट दो।

अभी भी षड्यंत्र से बाज नहीं,
मन में नही विश्वास है।
कोई कुछ बिगाड सकेगा,
देखा है, देख लेंगे कौन सरताज है।

सच और झूठ को तौलो,
कितना मेरे, कितना तेरे पास है।
अब भी अदला-बदली कर लो,
बाद में केवल सत्यानाश है।

शेर बनकर जी रहा अबतक,
पिंजड़े का निर्माण हुआ तब तक।
कैदी जीवन का तुझे भास है,
देख लो, चाबुक मेरे पास है।

गरज उठते हो कम नहीं तुम,
निर्लजता को हद करते हो।
सबक सिखा नहीं कभी तुम,
सदा बनावटी दम भरते हो।

निकला हूँ अब दम भरने,
चला हूँ घर-घर अलख जगाने।
अब तक तन में भरा सांस है,
काट डालूँगा जो भी ब्रम्ह फांस है।

आदाब, सलाम, प्रणाम है,
आखरी मंजिल सूरधाम है।
काश ! भला कर पाऊँगा,
जीते जी तर जाऊँगा।

हिन्दुस्तान

जन-जन की रखवाली करता,
तनिक नहीं किसी से डरता।
हवा और पानी को ठहराता,
प्रेम और भाईचारा सिखलाता।

जहाँ पशु-पक्षी हैं पूजे जाते,
झील तालाबों में नहलाते।
नदियों में प्रेम की धारा है,
मां गंगा ने उबारा है।

कितनी हस्तियाँ आ गुजरे,
हमारी एकता के आगे न ठहरे।
जहाँ हैं, जन्में अनेक महान,
विश्व का अजूबा हिंदुस्तान।

गाँधी की धरती, जहाँ,
आंधी और तूफान।
सत्य-अहिंसा की है धरती,
अम्बर में गुनगान।

तिलक करो इस मिट्टी का,
उपजा भीम महान।
पूजा करूँ उनका,
लिख दिया संविधान।

ऋषि मुनियों की धरती है,
तपोबल से हमें सहलाती हैं।
विघ्न बाधाओं को हर लेती है,
प्रेम भावों से नहलाती है।

सोना-चाँदी जहाँ, हीरे की खान,
अभ्रक से मिला है पहचान।
जड़ी-बुटी में है वो जान,
सेवन करते बचता प्राण।

अमर कथा वीर सपूतों की,
परमहंस, गौतम महान की।
जय-जय चारों धाम की,
पूछो मत बाबा धाम की।

धोती, कुर्ता, खादी शान,
हरा भरा है खेत खलिहान।
भूखा, नंगा, सबका मान,
नहीं किसी का है अपमान।

जन-जन का हो जहाँ सम्मान,
कहते हैं उसी को हिंदुस्तान।
दबे कुचले की बनी पहचान,
जबसे आ गया संविधान।

नदियों का जहाँ संगम है,
पक्षियों का बड़ा विहंगम है।
हर-भरा जहाँ गुंजन है,
कंद, मूल, फल सा व्यंजन है।

नारियां जहां की स्वर कोकिला,
लता की जहाँ पहचान है।
फूट पड़ते, मधुर स्वर जब,
गूजं उठता सारा हिंदुस्तान है।

निकल पड़े जब लेकर सारंगी,
टिक सका न कोई फिरंगी।
भूखा पेट, दाने-दाने की तंगी,
वतन पे मरने वाले हैं भंगी।

देहात के बच्चे

देहात के बच्चे कितने अच्छे,
देखने में भोले-भाले लगते।
ढूँढ़ते हैं इतिहास पुराना,
मिलते हैं सबसे ऊँचे।

गाँधी, सुभाष गाँव में जन्मे,
लिए जन्म अनेक महान।
किनका-किनका नाम पुकारूँ,
किसी ने लिख दिया संविधान।

बाबा की जयकार जगत में,
कर रहे प्रबल गुणगान।
बाधाएं चाहे लाख अनेक,
मिल तो रहा है अभयदान।

आया इन्टरनेट का जमाना,
खुल गया मस्तिष्क का खजाना।
जो नहीं पहले कभी सुना,
देख रहा हूँ गजब निशाना।

फटे-चिटे पर साफ़ पहनते,
प्रतिभा के बल सम्मान पाते।
सड़क की रौशनी में पढ़ते-लिखते,
जो मिल जाता वही खा लेते।

आज तो मोबाईल का होड़ है,
कल लिया आज फेंक दिया।
दाम का तनिक प्रवाह न किया,
हमसे दामी जो मित्र लिया।

तह में नीचे डूबकर देखो,
रत्नों से भरा भण्डार है।
कल पर खड़ा आज है,
भूल न जाना वही सरताज है।

गुरु-शिष्य का बन्धन टूटता,
पीडीएफ से अब नाता जुड़ता।
पुस्तकों का कोई प्रवाह नहीं,
जिस में भरा है वो भाव सही।

विनिमय का अब रूप बदलता,
पान भी खा कर स्कैनर टूटता।
देखो कैसा बदला जमाना !
खरबों का व्यापार सम्भलता।

लिया जन्म पित्रोदा महान है,
जिस पर देश का गुमान है।
अबुल पकिर का तो कहना नहीं,
कोई दिखा दे आँख तो सहना नहीं।

बच्चा-बच्चा बोल रहा है,
देखो आँखें अब खोल रहा है।
निकल पड़ा जब खोज करने,
दुनिया की ताकत तौल रहा है।

नहीं है कोई हमसे आगे,
अपने को अब समझ लिया है।
सही पथ पर बढ़ रहे अब,
दुनिया को मुड़ी में कर लिया है।

मनमोहन

मन को मोहने वाले को, मनमोहन कहते हैं,
जग को जीने वाले को, जगजीवन कहते हैं।

खड़ा किया मिशाल, सभी सम्मान करते हैं,
लहरा परचम दुनिया में, गुमान करते हैं।

मीठी बोली मधुर वाणी, उसे मुस्कान कहते हैं,
लोहा मनवाया हुनर का, जिसे निर्माण कहते हैं।

पैदा किया उदगार, जिसे उद्बोधन कहते हैं,
बोलकर जीते दिल, उसे प्रबोधन कहते हैं।

कर दिया कमाल, फिर उसे अपमान करते हैं,
बोलकर कम मचा दिया शोर, उसे मौन मोहन कहते हैं।

लिया जन्म जहाँ रहा नहीं, उसे पाकिस्तान कहते हैं,
किया नाम रौशन जिसका, उसे हिंदुस्तान कहते हैं।

डिग्री जितना हासिल किया, विद्वान कहते हैं,
उठा दिया जब देश को, ज्ञानवान कहते हैं।

लड़खड़ाया देश जब, आह्वान करते हैं,
थाम्ह लिया बागडोर, उसे क्षमतावान कहते हैं।

सहर्ष स्वीकारे अवगुण को, गुणवान कहते हैं,
डट जाय मुकाबले में, उसे शक्तिमान कहते हैं।

सह ले सारे अपमान, उसे महान कहते हैं,
गिरे को उठा ले, उसे भगवान कहते हैं !

निष्ठावान

जगते हैं जरूर पर देर से,
क्या कहूँ सोते हैं गुरूर से।

सक्स तो सक्स होते हैं,
जो पापियों के पाप धोते हैं।

याद करेगा जमाना तब,
धीर जायेगा मुल्क जब।

चाहत नहीं रही है कोई,
मिलता गया जो मिला है भाई।

असफलता तो नहीं कही जा सकती,
सफल भी कहूँ तो कैसे।

नाउम्मीदी बदल गई उम्मीद में,
गजब हो गया डूबा सभी मुरीद में।

उसे बोलना क्या, जिसका काम बोलता है,
नाम क्या उसका चरित्र बोलता है।

धन्य वो मानव, जन्म लेता एक बार,
लेकिन नाम लिए जाते, उनके सौ बार।

जितना बड़ा खिंच दिया लकीर,
बड़ा खिंच दो उससे है कोई वीर।

सत्य-निष्ठा का पालन करता,
शपथ को वो मर्यादित करता।

कितने लोग है वैसे, जो,
कर पाते हैं पूरा वो।

ईश्वर की शपथ लेते,
नीचे उतरते ही भूल जाते।

जो है बड़ी-बड़ी बातें करते,
वही देश को हैं ज्यादा लूटते।

किया, कम बोलकर ज्यादा काम,
फिर ज्यादा बोलने वाले का ही नाम।

ईमानदारी की जो रक्षा करता,
उसी को धक्का खाना पड़ता।

कुशलता का परचम लहराता,
नहीं किसी से है खौफ खाता।

सच्चा नायक होवे तौन,
काम करे पर रहे मौन।

सम्भल कर चलेंगे मुराद पाने को,
अस्थि जलेगी पूरा कर पैमाने को।

ठोकरें है अनेक चोट खाने को,
लाख सम्भलें काफी है फिसलने को।

मिट जाएगी तमन्ना एक दिन,
वक्त आ जायेगा चोला बदलने को।

नहीं कर घमंड चूर हो जायेगा,
बिना भिड़े सबुर नहीं हो पायेगा।

बलवान का भोजन है गम,
निर्बल जोर लगाता हरदम।

कसूर छीप जाते हैं उनके,
सभी दुबक जाते हैं डर से जिनके।

दिल में काला रखकर बोलता,
सत्य से कोसों दूर हो जाता।

मधुर सम्बन्ध में प्यार भरा है,
द्वेष क्लेश से तन भरा है।

जिगर चाहता कुछ कहना,
भूल जाते हैं समझकर अपना।

जन-जन जिसको करे पुकार,
समझो वही है खेवनहार।

वीर नहीं सोता है पल भर,
धैर्य कभी नहीं खोता है।

समझो जग में है कौन वो,
जिसे नहीं कोई भूल पाता है।

घोर तपस्वी बनकर जिए,
भला बुरा कुछ भी पीये।

जिसके दिल में है निर्माण,
मानो बसते वहीं भगवान।

ज्ञानी का स्वभाव पुराना,
गुणों से है भरा खजाना।

तीर-धनुष और बाण बनाना,
पर है नहीं खुद को चलाना।

संयम से जो कोई जीते हैं,
दम भर गम को पीते हैं।

आवा-गमन का लीला है,
अमृत नहीं किसी को मिला है।

कन-कन सारा सिंचित है,
तभी तो इतना संचित है।

मिट्टी-पानी पवित्र है जितना,
मधुर वाणी में दम है उतना।

चप्पा-चप्पा अब बोल उठा है,
लाख कहे कोई सब झूठा है।

केवल बीबी-बच्चें हैं अब,
जन्म-दाता जो पीछे हैं तब।

पूरी नहीं अधूरी है अब,
मन की जो जरूरी है सब।

देख लिया अब झूठा सपना,
माँ-पिता अब नहीं है अपना।

भाई-बन्धु हुए सब दूर,
रहा नहीं कोई कर लिया सबुर।

रात न बदली दिन न बदला,
भला कैसे बदल गया इन्सान !

नन्हें बच्चे

नन्हें-नन्हें प्यारे बच्चे,
घर में शोर मचाते !

जिस दिन छुट्टी होती स्कूल में,
गलियों में है धूम मचाते !

छोटे-छोटे नन्हें, खुले मन के होते,
लाख यतन के बाद भी, दूसरों से मिल जाते।

खेल-खेल में रूठ जाते हैं, पर,
देर तक रूठे नहीं रह पाते।

मिल-जुल कर टोली बनाते,
चिड़ियों सा चहचहाते !

जिसके पास देख लेते कुछ,
लेने को जिद मचाते !

खाने-पीने पर ध्यान कहाँ,
जब खेलों में रम जाते !

नये-नये जब कपड़े पहनते,
फूलों सा खिल जाते।

घर-घर से निकल कर बाहर,
मिलकर खूब मचलते !

दिन भर जो स्चूलों में होते,
घर में ला सुनाते !

कोई कुछ बोल उठा तो,
सुनकर नहीं छिपाते !

मन में होते, हम किसी से कम नहीं,
जिस समय लगता वैसा, छण में टूट जाते !

जिसके साथ जिसको बनता,
जमकर पैठ बनाते !

घर-आंगन सब सुना-सुना,
स्कूल जब चल जाते !

यह निश्चलता सदा रह पाती,
दुनिया तो कुछ और हो जाती !

छोटे बच्चे कितने अच्छे,
सबको हैं मन भाते !

मिट्टी-बालू में खेल दिखाते ,
हाथी घोडा बनाते !

पर्व-त्योहार खुशियाँ लाते,
जम कर मौज मनाते !

मनोरथ

खुला पथ सज गया रथ,
देखो, पूरा होगा मनोरथा।

कितने तरकीब निकल आये हैं,
समझो तक्रदीर खुल आये हैं।

आधुनिकता का परचम लहरा,
भाग्य उदय का झन्डा फहरा।

दुनिया मुट्ठी में हो चुकी है,
खबरें पल-पल मिल रही हैं।

जिसकी जितनी जैसी क्षमता,
बाँट रहे हैं उतनी ममता।

चाँद पर जाना तो छोड़ दें
घर आंगन को वहाँ से जोड़ दें।

कहाँ नहीं अब जाएगा मानव,
अनुपम यश पाएगा मानव !

घर-घर अलख जगा रहा,
गोली चमत्कार का खा रहा।

मशीन मस्तिष्क का चालू है,
रुकेगा नहीं अब कृपालु है।

मिनट सेकेंड का है कीमत समझा,
है उससे कदम मिलाना सिखा।

यह दुनिया नहीं कमाल है,
भरा ज्ञान से बड़ा जंजाल है।

खोज रहा विज्ञान सारा
कर न सका अबतक पूरा।

दादी-नानी

जोश जवानी की कहानी,
कह सुनाई दादी-नानी।

मत पूछो उनकी जुबानी,
कहाँ मिलेगी वैसी वाणी।

तेल-फुलेल की बातें करते,
पीली सरसों कच्ची घानी।

डांट-डपट कर खूब खिलाती,
होते शाम किस्सा सुनाती।

एक सेर सत्तू ले लूँ,
आधा गो प्याज हे।

चलो भौजी पत्थर फोरो
जबलपुर पहाड़ हे।

माँ-पिता से जब डांट खाते,
दादी के पास खूब रोदन करते।

दादी सुनकर खूब गुस्साती,
माँ-पिता को डांट पिलाती।

रह-रहकर ननिहाल चल जाते
नानी के लाड-प्यार में नहाते।

थर-थर कांपते मामा-मामी,
एक पैर पर रखते नाना-नानी।

चाहे जितनी अच्छी कटे जवानी,
सदा याद आते दादी-नानी।

दुनिया में भले परचम लहराऊँ ,
दादी-नानी फिर न पाऊँ।

जुगनू

जुगनू की चमक को देखो,
रंग-बिरंगी हरियाली है।
चाहे जितने करते भकभूक,
तनिक नहीं सरमाते हैं।

लाख अँधेरा छाया है,
भरपूर खुशियाँ लाई है।
नजर पड़ते जिसके भी,
पाने को जी ललचाई है।

प्रकृति की लीला है,
अम्बर बड़ा चमकीला है।
क्या कहूँ लगता कैसा,
रात भी रंगीला है।

यहाँ-वहाँ, जहाँ-तहाँ,
मत पूछो, कहाँ-कहाँ।
चमक-दमक कर खेल दिखाते,
रह-रहकर जी ललचाते।

भले रात में दिख जाते,
पता नहीं दिन में कहाँ खो जाते।
घर आंगन जगमग करते,
बाहर खूब बलखाते !

क्षण में उगते क्षण में डूबते,
रह-रहकर मन को भाते।
मत पूछो वो कैसे लगते,
उदक-उदक कर मन को भाते।

मत पूछो वो कब-कब आते,
जाड़े गर्मी भर छीप जाते।
देखना हो मौसम वर्षाती,
टिम- टिमाते भगजोगनी बन जाते।

काश! लम्बी आयु होती,
सालों भर दिख जाते।
जितनी कम आयु होती,
उतने दिन ललचाते।

कब कहाँ हैं खाते-पीते,
भूखे प्यासे मर जाते।
एक-दो बार भले दिख जाये,
बार-बार नहीं दिख पाते।

प्यार में पागल

दिल के धडकन से पूछा,
क्यों कर रहे हो पीछा।
हाँफ रहा हूँ बोलूँ क्या,
टटोलने पर मिला केवल छूछा।

हरी थी पर प्यारी थी,
दिल से सबकी न्यारी थी।
समझी, धैर्य की है जरूरत,
मन में था बहुत, पर कुंवारी थी।

अगर न होता हलचल मन में,
करती कैसे, जो घर सुमारी थी।
थी तो कच्ची, पर अनारी थी,
पा गई मंजिल, क्योंकि प्यारी थी।

समझी धू-धूकर जलने से अच्छा,
मन से मर जाना है।
जिन्दगी अमृत है तो,
जी भर कर पी लेना है।

भटकती फिरती है जहाँ-तहाँ,
पर ढूँढ़ नहीं पाती हैं वहाँ।
है कौन वो जो ढूँढ़ रहा है मेरा,
तनिक भी कोई बतला दे सारा।

जगमग करती रातें सारी,
घर-आंगन में खेलें दुलारी।
थिरक-थिरक चढ़ें अंटारी,
मनमोहक सी अति प्यारी।

जलने वाले को जलने दो,
प्यार में मुझे पलने दो।
खुद कफन अब बांध लूं,
तन मिट्टी में मिलने दो।

अब न रुक पाऊंगा,
दरिया में कूद जाऊंगा।
लिख जाऊंगा वो दर्द,
पढ़ पायेगा कोई मर्दा।

पल-पल अब तक सम्भला,
भीतर-भीतर खूब उबला !
मिट जाएगी तमन्ना,
दिख न सकेगा अगला।

प्यार में बना पागल,
दिल हुआ जब घायल।
मिट गयी वो दूरियां,
बंध गई जब बेड़ियाँ।

घुंघट डाले लोकाचारी,
दुल्हन बनी नई बेचारी।
जी चाहता निकलूं बाहर,
पर है नहीं यहाँ महतारी।

पाकर प्यार हुआ मदमस्त,
किसे सुनाऊं बीता जबर्दशत।
पर तडपन था वो क्षणिक,
बन सका न प्रमाणिक।

असली राज

पल-पल बदल जाते हैं,
दिन कायम रह जाता है।

दिन बदल जाते हैं,
महीना कायम रह जाता है।

महीने बदल जाते हैं,
वर्ष कायम रह जाता है।

वर्ष बदल जाते हैं,
युग कायम रह जाता है।

योनियों में जीवन है,
भटकना अमूमन है।

मूल्यवान मानव जीवन है,
टिक न सका यह मृतभूवन है।

जो आता है, वो जाता है,
कुछ भी नहीं रह पाता है।

जिसने गणित बनाया है,
अद्भुत रहस्य छिपाया है।

अपने-पराये का भेद सिखाया,
उलझनों का है जाल बिछाया।

लोभ-लालच में भरमाया है,
असली राज नहीं बताया है।

जीवन बदल जाता है,
यश-अपयश रह जाता है।

तन जल जाता है,
मन नहीं रह पाता है।

नीतू

विकलांग नीतू का संघर्ष,
प्रेरणा स्रोतबन जायेगा।
कितने साहस खो जाते हैं,
कुछ नहीं कर पाते हैं।

अचरज भरी बातें दिखी,
पिता के गोद बैठी बेटी।
उम्र से तो थी न छोटी,
पर कूदरत की थी मारी बेटी।

नीतू की जो प्रबल इच्छा,
स्नातक की लिख रही परीक्षा।
देख-देख कर ताज्जुब लगता,
कर पाते क्या, कुछ नहीं सुझता।

कद इतना छोटा है,
पर कुछ करने का सपना है।
तनिक नहीं चल-भूल पाती है,
गोद में बैठी चली आती है।

पिता बेचारे ढो रहे हैं,
मन ही मन सब गो रहे हैं।
विकलांग बेटी की तमन्ना,
करूं पूरा फर्ज है अपना।

मन मिजाज से बुलंद इतना,
क्या कहूँ चंचल है जितना।
क्या कोई कुछ कर पायेगा,
लगता है कर पायेगी उतना।

गाँव, सुदन है, घर अपना,
दो भाई, और तीन बहना।
अपने सबसे छोटी है,
पर तनिक निराश नहीं बैठी है।

जो कुछ भी कर पा रही है,
दूसरों को तरसा रही है।
तन से जितनी अधूरी है,
उतनी ही मन से पूरी है।

दाम्पत्य जीवन का सुख नहीं,
धन-दौलत का कोई भूख नहीं।
पराश्रित जीवन ही तो जीना है,
फिर क्यों अफ़सोस का घूंट पीना है।

अजूबा मानव

धक-धक करता प्राण किसी का,
जब आफत में घीर जाता है।
रोक सके न आफत कोई,
लाख सभी से नाता है।

हिम्मत मिला है धरोहर,
धैर्य बना सहोदर है।
संयम मिला संदेश सभी को,
फिर आफत तो छूमंतर है।

कर्म सुकर्म का पलड़ा देखो,
कब किधर झुक जायेगा।
आचार विचार संस्कार को देखो,
कब घुल-मिल वो जायेगा।

अन्नत की खोज करने,
निकला मानव अजूबा है।
भले नहीं कर पाया अबतक,
ठान लिया तो ठाना है।

भाई-चारा का परचम लहराकर,
शक्ति पुंज खड़ा कर पायेगा।
निर्धन हो या धनवान जगत में,
मिल बैठकर सब खायेगा।

समझो उस मानव को,
शून्य का आविष्कार किया।
उनसे बढ़कर है कौन,
अक्षर छब्बीस का निर्माण किया।

गढ़ना-पढ़ना परस्पर है,
गढ़ दिया तो पढ़ लिया।
पढ़ लिया तो गढ़ दिया,
मानव में गजब का हुनर है।

पहिये का आविष्कार किया,
विकास को है गति दिया।
जैसे पाया वैसे जिया,
निर्माण में खुद को व्यस्त किया।

अति पुजनीय शिल्पकार हैं,
भांति-भांति आविष्कार है।
गिनती कर पाना है कठिन,
आखिर जितने औजार हैं।

गुरुर मिटने वाला है !

अतिशीघ्र पावन धरती पर,
चमत्कार अब होने वाला है।
जो होना था वो हो गया,
पाप का घड़ा फूटने वाला है।

सहन शक्ति के क्षय होने से,
भूकम्प का लावा फूटने वाला है।
सत्य पर असत्य का बोझ,
शीघ्र अब उतरने वाला है।

अँधेरी गली में भटक रहे थे,
भेपर लाईट लगने वाला है।
कलेजे पर पैर रखने वालों का,
अब गुरुर मिटने वाला है।

खून-पसीने से वतन है सींचा,
बेकफन, दफन होने वाला है।
दया धर्म में भेद किया,
वतन जो लूटने वाला है।

किसको किसको रोक पाओगे,
अब न कोई रुकने वाला है।
अपनी ओहदा ऊपर रखा,
सहज ध्वस्त होने वाला है।

थिरक उठा है अल्पज्ञानी,
सूर्य को आँख दिखलायेगा।
ज्ञान का है अन्त कहाँ,
भले विज्ञान चमत्कार दिखायेगा।

अंधियारे में तारे बनकर,
उग समय पर जाते हैं।
मिलकर सप्त ऋषि मंडल, तो,
कोई ध्रुववतारा बन जाते हैं।

असमानता की खाई चौड़ी,
मिट नहीं सकती है वैसे।
जाग उठा जनमानस अब,
भेदभाव मिटने वाला है।

सच-झूठ का जाल फैला है,
शिकार फंसने वाला है।
एक दूसरे पर विश्वास घटा है,
पाखण्ड का बोलबाला है।

तन से क्या, परछाई से दूर,
अब तो निकट होने वाला है।
हिल उठा पाखण्ड का नीव,
भेद-भाव मिटने वाला है।

ज्ञान-अज्ञान को छोड़कर,
रंग रूप का बोल बाला है।
ढूँढ़ रहा अब कोना-कोना,
बोलो, भेद कौन रचनेवाला है ?

आलस्य

नींद के पहरेदार है आलस्य,
धन-दौलत के निकास है आलस्य।
आलस्य कुछ कहलाता है,
ऐश्वर्य के बाद भीख मंगवाता है।

सुख सम्पदा जाती रहती,
परवाह नहीं करता आलस्य।
क्या था क्या हो गया,
अंत में बतलाता आलस्य।

सुख नींद में डुबाता है,
आराम से सुलाता है।
आज नहीं कल कहवाता है,
तब तक वक्त निकल जाता है।

इतिहास नया नहीं पुराना है,
उजड़ते देखा बड़े-बड़े घराना है।
कहाँ हैं वो अब राजे महाराजे,
जिनके नाम का डंका बजना है।

सुन लो मेहनत से उठने वालों,
उठने की भी एक सीमा है।
ढहने की बारी तो आयगी ही,
जिसकी नहीं कोई बीमा है।

लाख जमा कर लो बन्दे,
कुछ नहीं टिकने वाला है !
बड़े जोर दो चार पीढ़ी,
फिर तो नाम मिटने वाला है।

किसको छोड़ा है आलस्य,
शायद किसी को बक्शा है।
आलस्य भला सृजन है जिसका,
वह भी भीतर-भीतर मुश्का है।

गरीबी

पूछ लो उनसे जरा,
गरीबी जिसने देखा है।

सांवां, गोंदली, मडूवा, मकई,
कोदो खा कर जिया है।

करगां, करहनी, दिधीयो, साठी,
दम भर खूब खाया है।

न जाने कितने साग-पात,
जिसके बल पर जिया है।

रोग निदान के उपाय अनेक,
मस्त जीवन जिया है।

लाख मुसिबत आन पड़ा हो,
डटकर मुकाबला किया है।

घनघोर गरीबी में भी,
ईमान कभी नहीं खोया है।

भूखे, नंगे, प्यासे को भी,
कभी नहीं टरकाया है।

दाने-दाने को तरस रहे,
बच्चों को संस्कार सिखाया है।

जब-जब संकट का बादल छाया,
मनीषियों ने संवारा है।

फिर से वतन पुकारा है,
जाग जाओ यही नारा है।

जिसको समझा अमीरी है,
स्मिता उसी से घीरी है।

मीठी बोली बोल रहे हैं, पर,
स्वक्ष जल में जहर घोल रहे हैं।

अमीरी और गरीबी का फर्क,
अब कहाँ रह गया है ?

समझ में भले जो आ रहा ,
गरीबी कल से आज बेशी छा रहा !

अमीरी तो आज का वो है,
लूट का धन जो बरस रहा है।

रूह कंपाती है गरीबी,
पाप नहीं सिखलाती है।

धन का भूख जगाती है,
मन में धैर्य बँधाती है।

जर-जर देह चिंता है भीतर,
अब करूं क्या, जाऊं किधर।

नहीं सुझता राहें कोई,
मुंह बाए खड़ी है गरीबी।

थक चूका हूँ झेलते-झेलते मुसीबत,
दिखती नहीं कोई रहें मगर।

अंत न हो जाये जीवन लीला,
टिका हूँ यही सोच-सोचकर।

धैर्य धरूँ उठ जायेगा जीवन स्तर,
गरीबी से हो लाख तन पलस्तर।

भूख से है ज्वाला धधक उठती,
मिल जाये कुछ बाकी और न सुझती।

जवान

जुग-जुग जियो जवान जगत में,
अरमान कभी न डिगेगा।
मस्तक ऊँचा रहेगा सदा,
स्वाभिमान कभी न झुकेगा।

आंधी हो या तूफान गगण में,
भूधरा कभी न डोलेगा।
स्मिता की रक्षा करने,
यौवन का जौहर खिलेगा।

अदभुत कलियाँ खिल उठी,
कौन उसे सरमायेगा।
जोश-जवानी की कहानी,
सुना-सुना कर तरसायेगा।

जिस पर राष्ट्र का नाज है,
उसी के मस्तक पर ताज है।
सुनहले भविष्य का आगाज है,
जवानी की कहानी लाजवाब है।

जवानों-जवानी की रक्षा करना,
यही अमर सन्देश है।
दुनिया में मस्तक ऊँचा हो,
जवानी का परम उद्देश्य है।

लाख मुसीबत आन खड़ा हो,
तुम कभी न डिगेगा।
देश का गुमान है जिसपर,
वह उफ़ कभी न बोलेगा।

जवानी की अदभुत कहानी,
सुन-सुन कर उपजी मर्दानी।
तनिक नहीं तब सुझा है,
जवानी का मर्म जब बुझा है।

राष्ट्र का रक्षक, पथ प्रदर्शक बनकर,
जिया है सदा सीना तानकर।
मनोबल कभी न टूटा है,
सदा जयघोष का स्वर फूटा है।

भूत, भविष्य, वर्तमान काल में,
ध्ये खड़ा भूचाल में।
रण से कभी न मुंह मोड़ा है,
दुश्मनों का कमर तुम तोड़ा है।

बेटी

सृष्टि की है गजब कहानी,
बेटी बन जाती है बहुरानी।
जन्म देकर पाला पोशा,
पर रहा नहीं कोई आशा।

त्याग का अदभुत मिशाल है,
यही तो संसार की चाल है।
जन्म घर में रुक नहीं पाती बेटी,
प्रकृति का आधार है बेटी।

चपा-चपा हुवा विराना,
जब छूट गया है वो घराना।
जहाँ गयी समझी अपना,
सुनने लगी सबकी कहना।

जलती है चिराग बनकर,
रौशनी गजब फैलाती है।
लाख मुसीबत आन पड़े,
तनिक नहीं डिग पाती है।

है शब्द वो कहाँ,
जिसके बल बखान करूँ।
माँ के शिवा समझे कौन,
जब वो दर्द का ध्यान धरूँ।

जेहन में समाती बेटी,
भूल नहीं पाती है।
तनिक कभी कष्ट सुनकर,
दौड़ी-दौड़ी चली आती है।

भूगर्भ में सृजित बेटी,
भूधरा पर आती है।
पल-पल प्यार में पलती है,
माँ की ममता में नहलाती है।

विदाई की बेला में वो जब,
करुण करन्दन फैलाती है।
परछन की घड़ी वो तब,
सब का मन बहलाती है।

घर-घर की कहानी है,
बेटी ही दादी-नानी है।
बेटी बिन सृष्टि कहाँ,
प्रगति की अनमोल निशानी है।

बेटी ससुराल चली,
जिसकी गोद में पली-बढ़ी।
जिस आँगन में है खेली-कुदी,
आज उसे त्याग चली।

छूट गयी सब दादी-नानी,
बनकर रह गई पहेली।
सास-ननद की खट्टी बोली,
अब कहाँ मिलेगी वो सहेली।

बेटी की कीमत को जानो,
कोशिश कर खूब पहचानो।
बेटी तो होती है बेटी,
बहु को अपनी बेटी मानो।

मथुरा-काशी

छू कर देख लो जिगर को,
हाथ से नहीं तो मन से ही सही।

इह-लीला समाप्त हो जायेगा,
फिर दोनों में से एक भी नहीं।

आदि अन्त पहचान रे बन्दे,
घूमते रह जावोगे मथुरा-काशी।

झूठ सच के फेरे में पडकर,
भटक रहे हो बनकर सन्यासी।

मन को स्वच्छ कभी कर न पाया,
तन धो-धो कर खुशी मनाया।

अदभुत लीला जगत में देखो,
कौन किसका है खुलकर बोलो।

झांक लो एक बार कभी,
दुखिया दुःख से व्यग्र हो जब भी।

नर-नारी की परस्पर बारी,
टिकी जिसपर सृष्टि सारी।

झूठ-सच को सौँद रहा,
समझा कभी न दुनियादारी।

जीवन भर हो लाख कमाया,
पर नहीं है कुछ ले जा पाया।

माँ-बाप को है अलग बसाया,
अब तो है खुद पर वक्त आया।

नेतृत्व

लाख मुसीबत आने पर,
सबका आक्रोश झेलना होगा।

लाख ऊँचाई हो पर्वत का,
वक्त पड़ने पर चढ़ना होगा।

जितना कर लो चोरी-डकैती,
सत्य की गैठरी खोलना होगा।

आंधी हो या तूफान,
उड़ जाने से बचना होगा।

रह-रह कर बड़ा झमेला होगा,
फिर भी आगे चलना होगा।

कौन कितना सही-गलत है,
उस पर तो नजर रखना होगा।

टेढ़ी-मेढ़ी हो, जितनी राहें,
उस पर तो चलना होगा !

भूखे-प्यासे या हो नंगे,
किसी को न भूलना होगा !

जन-जन की सुख-सुविधाओं पर,
एक नजर तो रखना होगा।

न्याय-अन्याय का तो फर्क,
बारिकी से तो समझना होगा।

कौन कहता है सब सही है,
एक नजर तो देखना होगा।

नायक चाहता हर कोई बनना,
पर उसके लिए तो झेलना होगा।

मुल्क

आग की लपेटे में,
जल रहा है मुल्का।
पानी की छींटे से,
बुझाने में लगे है दूता।

भला ! क्या था सपना,
जिसे देखा था वीर सपूता।
आखिर सुलगा कैसे,
पूछ बैठेगा अग्रदूता।

अफ़सोस है, जल उठेंगे,
घर परिवार उनके भी।
मरा-मिटा देश के लिए,
क्या था उनका कसूर ?

चिख-चिल्लाहट चहुओर है,
जाऊं तो जाऊं किधरा।
कोई तो बता दे राह,
तुम्हें जाना उस ओर है।

दोषी भले एक या दो हैं,
जलने में तो मुल्क है।
राख ही राख रह जायेगा,
जिसका नहीं कोई शुल्क है।

मन भले न जले,
तन जल रहा है।
जिससे था उपजा,
उसी में मिल रहा है।

शायद यही है,
प्रकृति की लीला।
जलते रहेंगे सारे,
उठता रहेगा पानी का बुलबुला।

ठहर कर सोचना होगा,
भाग दौड़ से बचना होगा।
कोई तो होगा,
जिसपर भरोसा रखना होगा।

नया जमाना

लाठी जिसके हाथ में होगी,
भैंस उसे चराना होगा।

मत पूछो जाती किसी की,
गोत्र तो बतलाना होगा।

जिसके हाथ में हुनर होगा,
उसी के पास निशाना होगा।

जात-पात का भेद मिटेगा,
फिर से नया जमाना होगा।

जिसकी जितनी बुद्धि होगी,
उतना ही उसे सहलाना होगा।

जिसमे होगा दम-दिलासा,
उसी के घर में दाना होगा।

जिसमे जितनी कायरता होगी,
उतना ही उसमे बहाना होगा।

मत पूछो की कौन कितना,
माँ-बाप का अपना होगा।

धरती-अम्बर की दूरी को,
डेग-डेग से नापना होगा।

दो दिल

लाख मुसीबत झेलना होगा,
ढूँढ़ ठिकाना मिलना होगा।

बुन रखा है जो ताना-बाना,
एक नहीं है अब उसका चलना।

अन्दर-अन्दर खौल रही हूँ,
हर वक्त तुमसे मिल रही हूँ।

देख लो झाँक अपने अन्दर,
तेरे धडकन से मैं खेल रही हूँ।

व्यग्र तो होना होगा,
पर धैर्य कभी न खोना होगा।

बस करो बहुत हो गया अब,
बिस्तर पर अब खेलना होगा।

जिसके पीछे पागल हम दो,
कौन नहीं जानता क्या है वो।

आखिर पर्दा का है मोल कितना,
नाप जोख कर तौल उतना।

अंधी गली में टकरायेंगे जब,
असली राज खोल पायेंगे तब।

पूछने वाले सरमायेंगे तब,
हम बन्धन को तोड़ पायेंगे जब।

गांठें सारे खुल जायेंगे,
जब हम दोनों मिल जायेंगे।

दिल दरिया

दिल बड़ा समन्दर है,
मन उसका पोरबन्दर है।
आर-पार का गोता खोरी,
बारी-बारी सीना जोरी।

लाख अगम हो गहरा जिसका,
चारों ओर से पहरा उसका।
विष-अमृत का संगम है,
जीव-जन्तु का विहंगम है।

बुल-बुले उठते गढ़े नाले,
उसमें नहीं उठ पाते हैं।
लहरों का है खेल अजुबा,
जहाँ नहीं कोई टिक पाते हैं।

झांक लो दूर से जितना,
करीब बड़ा सुहाना है।
गोता लगाने की जब इच्छा,
बेपरवाह कूद जाना है।

डुबकी लगा लेते हैं लोग,
कोई बच तो कोई मर जाते हैं।
दिल-दरिया का थाह लगाने,
बड़े-बड़े दीवाने हैं।

शायद किसी ने देखा होगा,
दरिया भी कभी सुखा होगा।
खारापन भले जितना हो,
फिर कामयाबी भी उतना हो।

जब मचल उठते हैं लोग,
नावों पर क्रीडा करते हैं।
देखने वाले देखते रह जाते,
भीतर-भीतर तरस खाते हैं।

चाह जब उफान मारती है,
विघ्न-बाधाओं को टारती है।
चिरती हुई कटीली राहें,
मंजिल को छू लेती है।

कसक

छिड़ा जंग जवानों में,
बूढ़ा और नवजवानों में।
नारी शक्ति रही पुकार,
बराबर की हैं हम हकदार।

कोई कहता धर्म प्रधान,
झुकेंगे नही कभी यजमान।
कोई कहता जाती प्रधान,
मिलेगा मौका खिलेगा जहान।

ऊँच-नीच में फंसा वतन,
आज़ादी ला न सकी चमना।
सूर्य कहता चाँद से,
चमक उठा मुझसे गगन।

तारों का क्या, जब,
बिन अँधेरी रात का।
प्रकाश लाख सूर्य फैलाता,
शीतलता तो चाँद ही लाता।

पता नही बढ़ रहे हम किधर,
नाविक ही जानता वो डहर।
लाख जिज्ञासु बन बैठे हैं,
अज्ञानता ले जाये जिधर।

होनहार तो हैं दबे पड़े,
सामने जो पाखण्ड खड़े।
पर सुन लो कान खोल कर,
वक्त पर रह नहीं पावोगे अड़े।

कसक है मन में,
मेरा भी दिन कब आयेगा।
लाख कोई कुछ कर ले,
बिन उसके कोई रोक नहीं पायेगा।

अनगिनत राहें हैं, पर,
अब तक ढूंढ़ नहीं पाए हैं।
जिसपर हमें चलना है,
मंजिल पाने की कसमें खाये हैं।

रौशनी चाँद या सूरज की,
भला चकाचौंध का क्या कहना।
राहें दिख रही हैं, मगर,
पता नहीं किस पर है चलना।

त्राहिमाम

त्राहिमाम, त्राहिमाम, प्रभु,
एक विनती सुन लीजिए।
घनघोर दहशत है चारों ओर,
संकट अब दूर कीजिए।

गलती जिसकी जैसी हो,
प्रभु, अवगुण चित न धरियो
पल भर की है दुनिया तेरी,
चाहे जो मन सो करियो।

कौन किसका है मजाल,
तेरे बिना पल भर के लिए।
देख लिया है जोर लगाकर,
कुछ कर न सका जीने के लिए।

न कोई प्रबल, न कोई दुर्बल,
प्रभु, केवल तेरे लिये।
यह संसार रचा है तूने,
अनवरत पथ पर चलने के लिए।

कोरोना ही कोरोना, प्रभु,
कहर बरपाने के लिए।
कलप उठी है धरती अब,
प्रभु, पीड़ा हर लीजिए।

कोरोना

कोरोना, कोरोना, कोरोना !

लूट ले गया खजाना !

अब क्या कहूँ जो था बचना,

रिक्त ही रह गया जमाना।

अति सुन्दर जो था एक नमूना,

छीन गया, बचा रोना ही रोना !

थोड़ा सोचता, बाकी है बिताना,

ले भागा क्षण में, दहला कोना-कोना।

कसूर नहीं जाना, क्या है होना,

सोचता, सम्भलता, पर तय था जाना।

बताता किसी को क्यों, क्या है करना,

फ़िदा था जाने को, बन गया बहाना।

कोरोना, कोरोना, कायरता का निशाना,

टूट पड़ता भेष बदल कर, नहीं है टकराना।

घात करते भारी ज्यों छिपना और छिपाना,

तडप रहा भीतर बाहर, अब नहीं कुछ पाना।

सितम ढह गया

क्या कहूँ, दास्ताँ,
कहा नहीं जाता।
गमगीन हूँ, पर,
सहा नहीं जाता।

ऐसा भी होता है,
सच ढक जाता है।
क्या कहूँ, जब,
सितम ढह जाता है।

भाई-भाई क्या है,
कह नहीं सकता।
आखिर किसको कहूँ,
खोये को, जो लौटा सकता।

आँधी था या झोंका,
उडा जो ले गया।
देखता ही रहा, पर,
देखता ही रह गया।

पत्ते भी झरते हैं पेड़ों से,
पेड़ सह लेते हैं झोंके।
पर दहशत के ऐसे झोंके,
पूरे जड उखड़ जाते।

पल-पल बीत रहा है,
सम्भल नहीं सब पाते।
अब उठ खड़े होते,
कि यूँ ही टपक जाते।

मांझी रे मांझी

मांझी रे मांझी,
मिलबौव तोर से सांझी।
कांटा कुशा बिच्छ के,
राखैय आपन खांची।
झूठ मूठ बोलैय नाही,
बसैय आपन रांची।
नोन तियन कहाँ पैबों,
खा हों बासी-कुशी।
मांझी रे मांझी,
मिलबौव तोर से सांझी।
आँधी आर तूफान अवैय,
डरैय तो नाही।
बाघ लाकर साब से,
करैय हाथा बाहीं।
मांझी रे मांझी,
मिलबौव तोर से सांझी।
जहाँ पारैय तहाँ बसैय,
पिधैय एक लगौंटी।
घर द्वार कहाँ पैबों,
रहैय बीचे प्राची।
नाहीं कुआँ नाही नल,
पियैय नदीक पानी।
मांझी रे मांझी,

मिलबौव तोर से सांझी।
देखैय में जैसन लागैय,
तों डरैय तनिको नाही।
जनी मरद जौरे घुरैय,
बांधी चेंगा गाती।

भ्रष्टाचार

रटते-रटते अत्याचार,
बदला नहीं है व्यवहार।
हाथ में कुल्हाड़ी या तलवार,
डरता नहीं है भ्रष्टाचार।

भले कोसते एक दूसरे को,
खुद को बनते हैं होशियार।
सोच समझकर नेता चुनते,
क्योंकि होवे रिश्तेदार।

जाति-जाति में है तकरार,
खोज रहे हैं शिष्टाचार।
भला बेडहर हैं दौर रहे,
कटने मरने की ललकार।

पढ़ लिख कर लाख निकलते,
ओहदा जरूर पा लेते हैं।
मन में बाँधे गांठ अनेक,
फिर तो उसी में मिल जाते हैं।

जो जितना तेज निकलता,
उतना ही वो फरियाता है।
बोलने में तो आगे रहता,
भारी लूट मचाता है।

सोचो उसका क्या होगा,
जिसका न आगे न पीछे है।
वक्त किसी को वश में नहीं,
आज तुम्हारा कल उसी का है।

दम नहीं है, नायक बनने,
चला केवल गाल बजाने।
क्या कभी वो लौटेगा,
ठान चुका था जिस पर चलने।

हममें उसमें फर्क क्या है,
हमें लूटने को आया।
कुर्बानी के बल पर भागा,
उससे बेहतर क्या कर पाया।

गली-गली में शोर है,
भ्रष्टाचार पुरजोर है।
एक-एक व्यक्ति सत्यवादी,
बोलो नहीं कोई चोर है।

दिन दोगुना रात चौगुना,
नेता बटोर ले जाते हैं।
तरस-तरस कर रह जाते,
देख-देख कर पच्छताते हैं।

घर से लेकर बाहर तक,
बच्चे खूब पढ़ाते हैं !
चोरी कभी न करना बेटे,
क्या कभी सिखलाते हैं ?

खाद पानी का अन्न खिलाते,
महंगी शिक्षा दिलाते हैं।
भीतर से अह्लादित होते,
भ्रष्टाचार में नहलाते हैं।

सच्चा नायक बन पाने को,
भूल जाओ सिखलाने को।
बिन कुर्बानी फिर कहाँ,
ठान लो मिट्टी में मिल जाने को।

गरज तो उठे हैं वो,
अब तक सहते रहे हैं जो।
वक्त चाहे जितना लगे,
तैयार हैं समर में कूदने को।

भूल-चुक लेनी-देनी,
देख लेना खाता बही।
तनिक विश्वास अब रहा नहीं,
वो जो कह दे वही सही।

अटल

टल न जाय वचन से,
अटल उसे कहते हैं।

चलता रहे अनवरत,
डिगे नहीं पथ पर।

लगा दाँव पर जीवन,
दिखलाया पूरा कर वचना।

जब-जब आयी एकता की बारी,
सफल कर दिखलाया गठबन्धन।

अनुभव के ही बल पर,
चला सब को साथ लेकर।

देखा उतार-चढ़ाव जब-जब,
समहला बाखूबी तब-तब।

कुंवारा हूँ, ब्रह्मचारी नहीं,
कहा, खुद जो था सही।

बजाने वाला गाल बजाया,
व्यक्तित्व ही अटल का काम आया।

जब-जब पार्टी भटकी थी,
मझधार में नांव अटकी थी।

देश-विदेश में नाम फैला,
भरा नहीं कभी अपना थैला।

हुआ कांड हवाला का,
फंसा व्यक्तित्व अटल का।

पार्टी वालों ने आगे कर, मुझे,
बलि का बकरा बनाया।

कहकर दम भरा अपना,
पुरा कर दिखाया सपना।

जब-जब अटल घिरता रहा,
दोहा के बल निकलता रहा !

प्रियदर्शनी

प्रियदर्शनी इन्दिरा गाँधी,
हुकूमत की थी आँधी।
नेतृत्व को लेकर हाथ,
कस कर जो कमर थी बांधी।

नारी एक मिशाल थी,
शासक तो कमाल थी।
कहने वाले कहते रहे,
खुद एक मशाल थी।

जो कहती कर दिखलाती,
लोगों का मन बहलाती।
भला दम किसी से कम नहीं,
दुनिया में डंका बजवाती।

भले धक्का जोर से खाई,
नसबंदी ला कर दिखलाई।
तब तो भारी अभिशाप था,
आज कहता, कौन पाप था।

भला शौर्य का क्या कहना,
दुनिया में परचम लहराई।
किसी ने आँख दिखाया कभी,
जम कर उसे सबक सिखाई।

भला देश पाकिस्तान का,
नस-नस उसका तोड़ दिखाई।
आजीवन सबक सिखाने को,
बंगलादेश जो है बनवाई।

देश में दूरदर्शन लाई,
वह तो अजूबा कर दिखलाई।
कही खुद मैं एक शोहरत हूँ,
सुन लो, मैं मूँछवाली औरत हूँ।

मेरी दशा दुनिया देखे,
दुनिया की चाल पकड़ न पाऊं।
ये भला कैसे हो सकता,
पिंजड़े में खुद को कैद पाऊं।

देश नहीं दुनिया की शान थी,
नारी जगत की स्वाभिमान थी।
जितनी अच्छी पत्नी-बढ़ी थी,
उतना ही देश पर कुर्बान थी।

राजीव

हमें देखना है उन ताकतों को,
जो इन्दिरा जी को छीन लिया।
आखिर मुल्क हमारा है,
कहता कौन है जो किन लिया।

मिला युवा तुर्क जब देश को,
खड़ा हो गया कान विदेश का।
भला जिस कोख से उपजा था,
नस-नस राष्ट्रभक्ति सृजा था।

देश का यौवन लहर उठा था,
बुश-गोरवाचव से आँख मिला था।
राजीव का था भेष अपना,
विशेष था कुछ मन ने सपना।

दौड़ कर चढ़ता मंच पर जब,
गडगडा उठता तालियों से तब।
जिंदाबाद का नारा लगता,
खड़ा हो जाता जब कुशल वक्ता।

व्यक्तित्व बड़ा विराट था,
गजब का सम्राट था !
था उपजा जिस कोख से,
महामहिम का ठाठ था !

नाना का ताना-बाना,
माँ का बड़ा निशाना था।
पिता का तो कहना नहीं,
खुद को चमकाना था।

पहनावा कुर्ता और पैजामा,
गजब का चादर ढकना था।
नाक नक्शा देखकर हर कोई,
बन पड़ा दीवाना था।

कौन जानता लूट जायेगा,
वतन को खूब रुलायेगा।
खुद कैसे जान पाता,
क्षण में उड़ जायेगा।

हश्त माँ बेटे का,
सदा याद आयेगा।
जो था वो चला गया,
फिर कभी मिल पायेगा ?

आया कौन जमाना

आया कौन जमाना,
माँ-पिता हुए बेगाना।
कभी सोचा था नहीं,
करना होगा सामना।

बेटा बेरोजगार है,
आफत का सरदार है।
रह-रह मांगे रूपये-पैसे,
देना बड़ा बेकार है।

जब न तब देखो,
लिए हाथ तलवार है।
कहता काट डालूँगा,
या तो खुद मर जाऊँगा।

माँ-बाप का दिल,
भला जाने नहीं कोई कैसे।
बेटा कुछ वैसा मत कर,
जी रहा हूँ तुझसे डर-डर।

जो कुछ भी है, सब तेरा,
रख, चाहे जो कर।
जान मत मार मेरा,
क्या कहूँ अँधेरा ही अँधेरा।

भला चढ़ा सुर बेटा का,
माने तो माने कैसे।
मोबाईल के संग मादक,
बिन उसके रहे तो कैसे।

बड़ी यतन से पाला-पोसा,
बदला मूड जब बेटे का।
आगे न पीछे सुझा,
आव न देखा ताव, भाला भोंका।

घर-घर की एक ही कहानी,
दहशत में हैं दादी-नानी।
घर परिवार सब रिश्तेदार,
डर से हो रहे पानी-पानी।

पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़,
सब पर जाता नशा चढ़।
भला-बुरा का रहा न फर्क,
लेता मन में अनहोनी गढ़।

आये दिन अखबारों में,
छपता हमला बाप-बेटों में।
कभी बाप तो कभी बेटे भी,
पड जाते हैं चपेटों में।

लेता है कौन सबक,
कुसंस्कार रहा जब धधका।
सुनने वाले इठलाते हैं,
पड़ता अपने पर तब बौखलाते हैं।

तिलमिलाहट

लिख दो इतिहास पुराना,
था नहीं जरूरत उसे छिपाना।
रो-रो कर ढूँढ़ रहा बहाना,
बच पाऊँ मिल सके ठिकाना।

कायरता में घिरा रहा,
छेड़ता रहा तराना पर तराना।
कुर्सी वास्ते बेच चुका है,
देख लो घराना का घराना।

जिस्म बेच कर कुर्सी पाया,
जीवन भर अपने को तरसाया।
खून-खून में है फर्क बताया,
दूसरों पर है कहर बरपाया।

आज है जब राज खुला,
दूसरों को कह रहा कठमुल्ला।
बचने को है ढूँढ़ रहा,
दूसरों को है ललकार रहा।

सुन लो सुनने वालों,
बहकावे में मत आ जाना।
जो करना है वो खुद कर,
समय को सही पहचान कर।

तिल-मिला उठा है आज,
देख रहा छिनता हुआ ताजा।
कैसे बचे जिस्मानी की लाज,
रुक नहीं रहा है वह काजा।

तिलक-चन्दन लाख लगा के,
जिना पड़ रहा है निर्लज बनके।
जिसको चाह रहा है भगाने,
आ रहा है वो करीब उतने।

जितने जोर से जो बोल रहा,
दामाद बनाने, दरवाजा खोल रहा।
कल की बात बड़ी पुरानी है,
ढूँढ़ रहा उपाय उसे छिपानी है।

चोटी और खाई

तलहटी में क्या पड़े हो,
चढ़ कर देखो पर्वत पर।
हिमालय से कौन बड़ा है,
देख लो उस पर चढ़ कर।

चढ़ने का मन बनाना होगा,
फिर तो दम लगाना होगा।
दिन-रात, सुबह और शाम,
लेना होगा तत्परता से काम।

झांक सकोगे दूर जितना,
मन में उठेगा बिचार उतना।
आखिर अंतर है कितना,
प्रकृति का तू राज ढूँढना।

हर कोई भले न चढ़ पावे,
लाख दम पर दम लगावे।
चढ़ने वाले राज बतावे,
सुना-सुनाकर मन बहलावे।

समुद्री तल है आधार बनता,
जिसके बल पर माप होता।
दूरबीन भला बनाने वाले,
असमानता का राज खोले।

कहीं पर चोटी कहीं पर खाई,
आखिर ऐसा क्यों दिखलाई।
खाई कहता चोटी से,
चोटी कहता खाई से।

कैसे मिलेंगे हम दोनों,
चोटी को तो धंसना होगा।
खाई को तो भरना होगा,
तभी धरातल समतल होगा।

काम चलेगा नहीं कहने से,
करके तो दिखलाना होगा।
बिन मन बनाये कैसे,
चढ़ना और उतरना होगा।

दिल से दिल मिलाना होगा,
मन की गाँठ खोलना होगा।
तभी तो मार्ग खुल पायेगा,
जिस पर चढ़ना और उतरना होगा।

सड़कें

अचरज भरी है दुनिया सारी,
पुत्र के शोक में लोटे महतारी।
सब का शौक बदला है,
दम नहीं सभी अबला है।

सड़कें बिच्छी हैं अनेक,
जिसपर हो रहे ओवरटेक।
पैदल पाँव अब चलना नहीं,
अपना नहीं तो कहीं ढूँढना सही।

रेस जितना जोर है,
देख रहा पुरजोर है।
जीवन तो एक सपना है,
फूट गया तो फोकना है।

पल-पल की खबरें हैं छाई,
कुछ यहाँ तो कुछ वहाँ पायी।
कौन किसकी गलती से,
पल में है सब कुछ दहाई।

मानव जोर लगाया जब,
हैजा प्लेग से मुक्ति पाया तब।
निर्झर बहती धारा है जब,
मौत अपना मुंह पसारा है अब।
भला काल कलवित हो जाते हैं,

एक साथ घर उजड़ जाते हैं।
कैसी बारी आ जाती है,
गुजरा पुत्र, बच गई महतारी है।

सम्हलना कौन सिखलायेगा,
जिसको जैसे जाना है।
वाहन सड़क एक बहाना है,
जाने वाले को कौन रोक पायेगा ?

अदभुत देख रहे हैं सपना,
धरती आसमान में उड़ना।
आफत में हर कोई सोचता,
पर खुद ही सम्हल नहीं पाता।

नसबंदी जब आँख खोला,
एक से दो अब कहाँ है भला।
लगता मन बदलना होगा,
एक से दो बढ़ाना होगा।

दुनिया के राज जाने कौन,
है कौन? बदल रहें जौन।
पग-पग पर सम्हलना होगा,
सोच-समझ कर निकलना होगा।

ये सड़कें हैं कैसी,
जिस पर मस्ती ही मस्ती।
भले लगी हो गस्ती पर गस्ती,
पर मिट जाती पल में हस्ती।

नहीं सोचती अबला-सबला,
कौन गरीब है कौन आमिर भला।
है नहीं कोई मोटा-दुबला,
आ जाये चपेट में, वही है पहला।

लालू को महान कहना होगा

जाग उठी वीरों की धरती,
गर्जन-तर्जन सहना होगा।
झुका नहीं मस्तक लालू का,
मूल्य त्याग का देना होगा।

यौवन को लहराना होगा,
धरती को माँ कहना होगा।
गर्भ में सृजित बालक का,
प्रसव पीड़ा सहना होगा।

गुरू चाहे जितना भी हो,
पल-पल तो सहना होगा।
पीया था दूध छट्टी का,
लालू को महान कहना होगा।

गर चाह उठा है मन में,
निश्चल भाव दिखाना होगा।
धू-धू कर जलने से अच्छा,
एक बार जय बोलना होगा।

क्यों कुंठित हो संगठन धारी,
धरती का ताप सहना होगा।
समय की ब्यार सुगन्धित,
लालू को महान कहना होगा।

सज गया संग्राम समर में,
गूंज उठा धरती आसमान।
वक्त है संकल्प दोहराने का,
कूद पड़ो तुम वीर जवान।

सामाजिक विष का पीया प्याला,
लालू को समझना होगा।
डिगा नहीं कतय पथ से,
जागृति का दूत कहना होगा।

खोज लो एक भी कहीं,
मिलेगा तो जानो सही।
लालू का विकल्प ढूंढना होगा,
पन्ना इतिहास का खोलना होगा।

लाख यतन सब कर लिया,
पर सार्थक नहीं कोई काम किया।
मिला वक्त लालू को जब,
तावे पर जलती रोटी को उलट दिया।

पेंशन

दर-दर ठोकें खाते-फिरते,
पेट की ज्वाला शांत करने।
हाथ कटोरा ले घूमते,
दे-दो कुछ रट लगाते।

नाती-नतनी, पोता-पोती,
आगे-पीछे सब करते।
दे-दो, दादी-नानी हमें कुछ,
हरदम रहते रट लगाते।

दादी भला दादी होती,
दरिया दिल दिखलाती।
माँ अपने-अपने बच्चों को,
चुपके-चुपके सिखलाती।

पेंशन धारी दादा-दादी,
बहुवें ध्यान लगाती।
किसी को कम किसी को ज्यादा,
काश ! कभी चूक हो जाती।

खाना-पीना दूर हो,
बंद हो जाता लोटा-पानी।
लालच वश जो कुछ हो पाता,
सटा रहता चूल्हा चौकी।

सरकारी सुविधाओं का फरमान आया,
बूढ़ा-बूढ़ी में जान आया।
कौन है माँ-बाप को पूछने वाला,
लाख हो कोई धन का मतवाला।

बेटों को पढ़ा लिखाकर,
चाहे जितना महान बनाया।
बहुवें दूढ़ने में नाम कमाया,
आया वक्त खूब पच्चताया।

बदला जमाना खुद समझाया,
कभी कुछ नहीं बोल पाया।
माँ-बाप को घर में कैद करके,
सास-ससुर को चारों धाम घुमाया।

पाला-पोसा जान लगाकर,
माँ हो गई धन्य जन्म देकर।
कौन है उस पीड़ा को माप सके,
जिस पर बीता वही जान सके।

माँ-पिता परिणाम न देखा,
हो जाने दो धोखा पर धोखा।
घर-द्वार बिक जाय तो बिक जाय,
पढ़-लिख बन जाय अनोखा।

सोचो क्या होता आज,
सरकार करती नहीं ऐसा काज।
कौन किसको पूछ पाता,
अन्दर-अन्दर खुद सरमाता।

दुर्गति चाहे जितनी हो,
सबक कभी न सीखना हो।
भला व्यर्थ तब हो जाता है,
जब संतान वंश में नहीं आता है।

विध्वंश

तनिक सोच कर देख लो,
क्यों इतना प्रतिशोध हो।
किसी ने खड़ा किया इमारत,
क्यों वह जमीं दोज हो।

राज-पाट बदल जाता,
अपने-अपने ढंग से काज होता।
भला-बुरा में फर्क कहाँ,
केवल रंजिश ही रंजिश रह जाता।

कट्टरता कोई आधार नहीं,
बता दे कोई उसका फल सही।
मुगल साम्राज्य को जाना पड़ा,
कट्टरता ही उसका कारण बना।

जैसा को तैसा समझ में आता,
पर दूर तक टिक कहाँ पाता ?
कहो किस काम की कुशलता,
जब सबक सिख नहीं पाता।

सपना है बनू विश्व विजेता,
जान लो कभी तो था वैसा।
भला सोच था कैसा,
बाघ-बकरी पानी साथ में पीता।

बकरी को डरा कर आज,
खुद को बाघ बन बैठा।
हाथी के सामने लुती कहाँ,
गुमान जरूर है पाल लेता।

झुंड बनाकर घूमते-फिरते,
देखते शेर को भाग जाते।
छीप-छीप कर कान लगाते,
दहाड़ वहीं से सुन पाते।

डर कहो या कायरता,
चुपके-चुपके घूमता-फिरता।
दूसरों के बल दहाड़ लगाता,
मौके पर छीप जाता।

सुन लो बहकने वाले,
बहकाना केवल, काम उसका।
सत्यानाश है सब कर बैठा,
ढूँढ़ कर देखो इतिहास उसका।

मिला मौका सिर उठाया,
सब दिन उसी से हाथ मिलाया।
पता चला करतूत जब,
ढोंग रचने निकल पड़ा।

है दम तो आँख दिखाओ,
शक्ति का परचम लहराओ।
वीर नहीं साहस खोते,
युद्ध भूमि में खुद हैं पाते।

विध्वंश कोई धारा नहीं,
बिन लडे कोई हारा नहीं।
चातुर्य बड़ा सहारा है,
कल के आगे बल हारा है।

आज वही है खौल रहा,
गंदा है इतिहास जिसका।
एक करने चला दूसरों को,
पीछे से रखा दरवाजा खुला।

बूंद-बूंद है खून भरा,
पट जायेगी भूधरा।
भला कौन किसको देख पायेगा,
मिट जायेगा वंश सारा।

दुनिया को बढ़ाने वाले,
समझ रहे हैं सारे के सारे।
होना तो वही है, जीने वाले,
जी पायेंगे उन्ही के सहारे।

संदेश

जंगल-जंगल छान मारो,
मिल जाय कहीं चंदना
धोके में कहीं पड़ न जाना,
समझ न लेना चन्दन।

जगत जितना विशाल है,
ढूंढ सको कहीं स्पन्दन।
मुंह मोड़ लेना नहीं तब,
सुन कर करुण करन्दन।

सबके दिल में बसने वाले,
समझ लेना वह कौन है।
सबका दुःख हरने वाले,
दूसरा नहीं, रघुनंदन है।

भोग-विलास में लिप्त है,
मदिरा पान में मस्त है।
खींच लेना उससे, जो,
कुछ भी फिजूल खर्च है।

गौर करके गहराई में,
उतर न जाना खाई में।
नीयत सदा है स्वच्छ रखना,
जूट जाना भरपाई में।

कहीं गम, कहीं खुशी है,
देख रहे हो वही सही है।
जिसके पीछे पागल हैं सब,
कुछ और नहीं वह पाई-पाई है।

बीहड़ जितना भारी है,
कहूँ क्या तैयारी है।
निकल पाने की टोह में,
लगी दुनिया सारी है।

बने काम ईमान से,
जीत पावोगे तीर कमान से।
समझ लेना कभी नहीं,
टिक पावोगे झूठे जुबान से।

झाड़-फूस राह कंटीली,
साफ़ किये बिना कोई।
चल सके उस पर जो भी,
चलना साथ लेकर सभी।

जन मानस का कद्र न भूलना,
जीना बनकर आज्ञाकारी।
लाख कोई चाह ले,
भूल न जाना दुनियादारी।

बिन पानी सब सुखा है,
अन्न बिना सब भूखा है।
बंट रहा जो भी घर-घर,
मुट्ठी भर केवल धोखा है।

नायक नहीं पाखंडी बनकर,
जी रहा है सीना तानकर।
भूल न जाना बदलेगा जब,
टूट पड़ेगा आँधी बनकर।

एक दिन जरूर आयेगा,
गुरुर टूट तब जायेगा।
दाने-दाने को तडपेगा,
सबका होश उड जायेगा।

बाँट रहे हो बढ़-चढ़ कर,
फिर भी मन नहीं भर रहा।
टिक पावोगे कहाँ जब,
पीटेगी जनता दौड़ा-दौड़ा कर।

सोच लो एक बार सही,
लौट कर आ जाओ वहीं।
जहाँ से सही राह मिल पायेगा,
मंजिल वहीं से मिल जायेगा।

कैसा रचाया ढोंग !

कैसा रचाया ढोंग,
दांत मुंह देखकर।
होते भोर उठकर,
यात्रा हो गया भंग।

भूख-प्यास के मारे,
दाना-दाना के फेरे।
काश ! कभी मौका मिला,
पर खाये कैसे संग।

गौरवशाली इतिहास बड़ा,
जिसके नाम है रचाया।
रोटी बिना तरस उठा जब,
घास की रोटी खाया।

आखिर शरण देने वाले की,
करो पहचान, था वह कौन।
तब कहाँ गया था वो शान,
जब भूख से बच पाया प्राण।

असलियत को उजागर करने वाला,
डंके की चोट पर बताने वाला।
समझो उपजा कौन महान,
डिगा नहीं, कायम रखा शान।

सन् उन्नीस सौ नब्बे,
बन बैठा तब वे।
सामाजिक न्याय का राग,
अलापा कुर्सी पर बैठ के।

कैसा डाला नींव पत्थर का,
खड़ा हो गया तल्ला पर तल्ला।
आज ऊपर देखो कौन बैठा है,
पाखण्ड का जमकर कान पैठा है।

यात्रा भंग नहीं, अब बन रहा,
पैरों तले दबे का मन ठन रहा।
अहंकार कीचड़ में सनरहा,
छूत था वही सबको धो रहा।

कंजूस की कथा सुना-सुनाकर,
सबका मनोरंजन कराया।
देखो बदल गया जमाना,
कंजूस था, आज देश लुटाया।

मंदिर का उद्घाटन कराया,
शंकराचार्य को खूब भरमाया।
बोलो हर्दी चुना सब,
कहकर सबका यात्रा बनवाया।

लज्जीत हुए सब वीर भूप,
जिन पर है कहर बरपाया।
अन्दर-अन्दर खौल रहे,
पश्चाताप का घूंट है पी रहे।

माना, लेकर निकलोगे खंजर,
असत्य का पहिया होगा पंचरा।
सत्य की ही विजय होगी,
जितने वाला होगा सिकन्दर।

मन ही मन खूब सोच रहे हो,
अपने आप को खोंच रहे हो।
कहाँ चली गयी चतुराई अब,
कुनीति का फल भोग रहे हो।

सामाजिक ढांचे का ताना-बाना,
बड़े यतन से, है बुना !
कसम-कस की बारी है, आज,
दरक चुका है कोना-कोना !

देखो कोल्हू अब गाड चुका,
घानी-पर घानी है डाल रहा।
दाना जितना पोहपीत है,
तेल उससे उतना गार रहा।

विदाई की बेला

कितने कवि लिख गये,
क्या लिखना अब बन्द हुए ?
विदाई और जुदाई दो ही,
आँसू के कन्वह खोल गये।

विदाई का बेला था,
सबका चच्छू गिला था।
क्षण वैसा हो नहीं सकता,
गजब का भाव खुला था।

माँ का हृदय अंचल,
आँसू रूपी सागर में डूबा था।
दहाड़ मारने से भला,
उन्हें कौन रोक पाता।

वश कहाँ, व्यां कर पाऊं,
उभरा क्षण की कीमत बतलाऊं।
संस्कार की संसार में,
वेदना छोड़, क्या उपजाऊं ?

भला द्रविड़ तब मैं खुद था,
क्या बतलाऊं अपने अन्दर की।
बारी तो मेरी भी थी, कभी,
अहसास अन्दर-अन्दर की।

बेटी पढ़ी-लिखी होती,
अनपढ़ क्या सिखलाती,
बेटी तो बेटी है, भला !
खुद कैसे रोक पाती ?

लगता नहीं, है किसी में दम,
है जो कोई कर पावे।
आगे न हो कोई बेदम,
ओर-छोर की दूरियां, कर पावे कम।

पौज बनाते कैमरा मैम,
बेटी का बढ़ता कदम।
डोली की तो बात नहीं,
सजी कार में ही सही।

दहाड़ का सैलाब था,
भाव भरा उफान था।
कार आगे बढ़ चली,
त्याग का तूफान था।

चाहता हूँ, दूर हो जाऊँ,
अपने को रोक पाऊँ।
पर हो नहीं पाता वैसा,
क्या कहूँ, जो हो जाती दशा।

बेटी में शक्ति है कितनी,
प्रगट कर पाती है जितनी।
जन्म दाता का संसार छोड़,
जीने-मरने का दम, भर लेती।

आविष्कार

आविष्कार पर आविष्कार है,
मचल रही सरकार है।
असमानता की खाई,
बढ़ती हाहाकार है।

घर-घर में तकरार है,
भूख से ज्यादा, लूट का संसार है।
महीना सुना था, तीस-एकतीस का,
अब तो चौबीस-अठ्ठाइस का करार है।

जेब भरा है पैसों से,
रहा नहीं किसी से दरकार है।
माता-पिता का जीवन कैसा,
बच्चों से केवल फटकार है।

अन्त कहाँ होगा ?
कुनीति का भरमार है।
ढूँढ़ कर देख लो हर तरफ,
नीति और नीयत फरार है।

मीठी वाणी हर के मुंह में,
फिर क्यों तकरार है।
अपस्वार्थ चरम पर देखो,
अब कहाँ परोपकार है।

अनगिनत पहरेदार हैं,
पर रहा नहीं अब चौकीदार है।
फैशन के दौर में,
भूल गया संस्कार है।

गाँव-गाँव में एक ही बात,
अब न रहूँगा एक साथ।
बच्चों को पढ़ाना है,
शहर का हवा खाना है।

कौन कहाँ बस जायेगा,
वीडियो कॉल पर दिख पायेगा।
मिलने को बेकरार है,
सूना पड़ा घर-द्वार है।

भारत देश महान है

सुन लो सभी दुनिया वालो,
भारत देश महान है !
गर कोई आँख दिखा दे,
उसका जवाब हिंदुस्तान है।

शक्ति इसकी क्षमादान है,
धैर्य और संयम की खान है।
भूल न जाना धरती वालो,
एक-एक स्वर अग्निबाण है।

शौर्य की गाथा इसकी,
गूँज रही धरती आसमान है।
हाथ ले खड़ा हो जाता,
तीर-धनुष कमान है।

बे अर्थ की गाथा, तनिक नहीं सुहाता,
जेहन में आन-बाण-शान है।
सुन लो आँख दिखाने वालो,
हाथ में धनुष, तरकस में बाण है।

भभकी देता आँख दिखाता,
दम नहीं सन्मुख हो पाता।
भारत जब गंभीर हो जाता,
पनाह नहीं मिल पाता !

सुन लो हैकड़ी बांधने वालो,
तनिक नहीं गुमान पालो।
मिट्टी में मिल जावोगे,
आजीवन पछताओगे !

चीख उठा धरती आसमान,
तेरे कुकृत्य हुवे जवान।
भूल न जाना दुनिया वालो,
भारत की है अपनी शान।

पुलवामा का है डंस झेला,
पहलगाँव फिर अबकी बेला।
क्या चाहते हो खुलकर बोलो,
भरो दम आँख मिला लो।

अनर्थ की भी सीमा है,
बचने की जीवन बीमा है।
ढूँढ लो गुमान वालो,
छिपोगे कहाँ बताने की जिम्मा है।

जन-जन की है यही पुकार,
अब न बक्सो, सुन लो सरकार।
तनिक नहीं है अब देर करना,
चुप रहने से अच्छा, जीना-मरना।

लहू की कीमत पहचानो,
आपस में तनिक भेद न मानो।
सुन लो नापाक इरादे वालो,
खैर नहीं अब हथियार डालो।

अंबेडकर

युग द्रष्टा का जन्म,
हुआ जग महान।
अँधेरा ही अँधेरा,
रौशन हुआ जहान।

दल-दल रही सरजमीं,
पावों का ठौर कहाँ।
कहूँ तो कहूँ क्या,
उपजा कोई नूर जहाँ।

लेते रहे हैं जन्म अनेक,
पर ये तो ठहरे केवल एक।
विधाता ने भेजा इसे,
करने उद्धार उचित भाव से।

था किसको पता,
जगत को राह दिखाने वाला।
लेगा जन्म संघर्ष करने,
अथाह खाई को भरने वाला !

धन्य है वो भाग्य विधाता,
याद आती सिहर उठता।
असम्भव को संभव बनाया,
क्या कोई वैसा कर पाया ?

बन्द पड़ा था वो दरवाजा,
कैद थी चार दीवारों में।
वस्तु थी केवल उपभोग की,
जीने वाली अंगारों में।

बार-बार अब रहे पुकार,
फिर से आवो एक बार।
हे जगत के भाग्यविधाता,
तरने भूवन को अवतार।

जितनी भारी भाव तुम्हारी,
ले हाथ सजाकर थारी।
दीप जलाकर दुखिया सारी,
हुई विभोर तेरी आरती उतारी।

गजब भाव से सृजा था,
उद्धार करने भेजा था।
मानव का था केवल रूप,
बन कर आया सच्चा दूत।

पग-पग पर बाधा था,
नियति को साधा था।
होते होश तू नाधा था,
सिखा सबक, जो व्याधा था।

अभी कहाँ पहचाना है तुझे,
व्यर्थ में है आपस में उलझे।
कहता है हार मानुंगा नहीं,
क्या है वो, कोई बता दे मुझे।

दिल थाम्ह कर इन्तजार कर,
सब कुछ समझ पायेगा।
सुन लो अब कान खोलकर,
नीच जब ऊँच हो जायेगा।

विघ्न और बाधाओं से लड़कर,
ज्ञान की चोटी पर चढ़कर।
मानव को त्राण दिलाया है,
जगत को राह दिखलाया है।

जीने वाले सिसक-सिसक कर,
पैरों तले जी पाया है।
सृष्टि की लीला है भारी,
तभी तो भूधरा पर आया है।

जन-जन की एक ही पुकार,
आते रहो तुम बारम्बार।
सज-धज कर हैं सब तैयार,
आरती उतारने का इन्तजार।

हमला

जिस भाव में जी रहा था,
कम्बल ओढ़ घी पी रहा था।
कहर बरप उठा मानव पर,
दोष किसका, सोच-सोच कर।

लो अब देख लो,
फिर से एक बार सोच लो।
उजड़ रहे उजड़ने वाले,
ठीक से इसे बुझ लो।

बड़ी यतन से पाला है,
वतन का रखवाला है।
आखिर थम्हता, तो कैसे,
तूने छेड़ दिया जैसे।

संयम की भी एक सीमा है,
स्वाभिमान की कोई बीमा है।
अच्छा किया जाति पूछ कर,
छीन लिया सिंदूर, राक्षस बनकर।

दुनिया सब देख रही है,
सामने जो बीत रही है।
तभी तो खून खौला था,
जब सर चढ़कर तू बोला था।

तनिक नही सोचा तूने,
आतंकी जाल क्यों बुनें।
हश्च बड़ा घातक होगा,
मानवता कलंकित होगा।

है कौन अपना, देख लो,
ले रही करवट दुनिया।
असत्य छोड़ सत्य की ओर,
चाहे लगा लो जितना जोर।

बम-बारी शोर शराबा,
ठिकाने सब ध्वस्त हो रहा।
करते हो दावा पर दावा,
बोल दिया अब मुल्क धावा।

मुखता की यही पहचान,
बेवजह पाल रखे गुमान।
पल-पल खड़ा हो सिनातान,
चाहे ध्वस्त हो उठे जी जहान।

वीर सपूतों का वतन है,
अदभुत शौर्य का चमन है।
गूँज रहा है अब गगन,
सबक सिखाने को मग्न।

बच्चा-बच्चा बोल उठा,
बक्सों में नहीं अब एक भी झूठा।
चाहे जितना जोर लगा लो,
कस कर बांध लिया अब मुठा।

याद करो उस क्षण को,
लूट रहा था जिस धन को।
मूल्य न समझा चीख चिल्लाहट का,
आज मिल रहा कुछ उस मन को।

धुआं-धुआं फैल रहा,
अफ़सोस हवा में घुल रहा।
कान खड़ा कर दुनिया सारी,
देख रही सब कर गुजारी।

भारत माता के पुजारी,
भड़क उठा है वो चिंगारी।
मत पूछो अब क्या होगा,
जीवन या कि मरण होगा।

भारत भूमि की वो क्षमता,
उपजती जहाँ सारी ममता।
तूने जब छोड़ दिया,
देख लो कितना दम था।

अन्धकार मिटाने वाला,
शाम का दीप जलाने वाला।
टकरा गया उसी से तुम, जो,
है दुनिया को राह दिखाने वाला।

घोर विपत्ति सृजा है,
दहा उठा जो अर्जा है।
दाने-दाने को मुहताज है,
पर तनिक नही लाज है।

संकल्प

संकल्प पथ पर बढ़ना है,
बाधाओं से डटकर लड़ना है।
तभी तो मंजिल मिल पायेगा,
नहीं तो जीवन व्यर्थ गंवायेगा।

संयम से जो है जीने वाला,
वही तो है शर्तों को पाला।
तनिक नहीं डिगा है पथ से,
बढ़ता रहा बन मतवाला।

मन में तू गाँठ बाँध लो,
हर सीमाओं को लांघ लो।
राहें भली हैं टेढ़ी-मेढ़ी,
चलना है, हिम्मत से काम लो।

घोर अँधेरा छाया है,
राही नहीं कोई मिल पाया है।
चलना है तो जान लो,
अकेला ही सही, मन में ठान लो।

दिशा विहीन जीवन की लाली,
छाएगा नहीं वो निराली।
उर बन्धन को काट लो,
गुरुर है तो गाँठ बांध लो।

कितने मिल जायेंगे वैसे,
चाहो तो तुम झाँक लो।
रोक सका न कोई उनको,
तस्वीर उनका खिंच लो।

महानता की कोई जोड़ नहीं,
हौसला की कोई तोड़ नहीं।
होते वैसे लाखों में एक,
अनुसरण करते हैं अनेक।

प्रेरणा एक आधार है,
चाहत की तेज धार है।
डूबने को मजधार है,
उसी से बेडापार है।

निकला था खोज में, दुनिया,
जुनून था, नाविक बनकर।
पुकारूँ उसे क्या कहकर,
आया था विरले, भूधरा पर।

चाँद पर जाने वाले को,
क्या कहोगे कुछ पाने वाले को।
चाह नही सिवाय लक्ष्य को,
पता करो वैसे मतवाले को।

दुनिया को राह दिखाने वाला,
लिया जन्म तेरे-मेरे जैसा।
माँ-पिता को खोने वाला,
वही तो एक अजूबा निकला।

सहने की अपार क्षमता हो,
दुनिया की, उर में ममता हो।
तभी, कुछ कर पावोगे,
नहीं तो केवल पछतावोगे।

मोम और बात्ती

अंधकार दूर भगाने वाला,
जीवन है अनोखा मोम।
अनमोल चाहे जितना हो,
पिघल-पिघल हो जाता कम।

बिन ज्ञान का जीवन कैसा,
बिन बात्ती मोम जैसा।
दोनों का अस्तित्व क्या,
है अलग होकर ऐसा-वैसा।

मोम की प्रकृति समझो,
अदभुत है इसका ढंग।
जल नहीं सकता स्वंय,
बिन बात्ती के संग।

ज्ञान की ज्योति जल उठता,
घनघोर अँधेरा को भगाने।
ज्ञान वास लेता है तन में,
एक तिल्ली का इन्तजार है मन में।

मोम और बात्ती का संग,
दोनों का गजब है ढंग।
मिलकर प्रकाश फैलाते हैं,
अंधकार भगाकर लेते दम।

कौन किससे है कम,
देख लो लगाकर दम।
तिल्ली में ताकत है जितनी,
बिन संयोग बेकाम है उतनी।

समझ सका जीवन का खेल,
क्या मुराद है बिना मेल।
जिसने अपने को ढाला है,
मन में वही सब कुछ पाला है।

कारगर हो जीवन सदा,
यही लक्ष्य संवारा है।
बिन तजुर्बा कुछ नहीं,
भटकता जीवन सारा है।

जल रहा है वह जीवन,
जगमग सारा रौशन है।
मिट गया अस्ति पंजर,
संदेशों का मंजर है।

जुदाई

क्या कहूँ, कहा नहीं जाता,
जबतक था, समय बलवान।
तनिक नहीं फूराता,
अपनों से बढ़कर भाई को पुराता।

सुख-भोग की बारी आती,
तनिक नहीं छिपाता।
चाहे जितना हो सके,
मिल बैठकर खाता।

कहने वाले क्या नहीं कहते,
कभी नहीं उस पर जाता।
सौभाग्य सभी को है कहाँ,
सहोदर भाई मिल पाता।

खेल-कुद कर हुए जवान,
माँ-पिता सौंप दिये कमान,
एक-एक कर बहुवें आई,
प्यार में घोली चतुराई।

घर-घर की कहानी सुनता,
ठठा मार कर हँसता।
कैसे क्या हो जाता,
कुछ नहीं बुझाता।

माँ-पिता हुए लाचार,
धीरे-धीरे हो गए भार।
समझ पावें तो कैसे,
सन्मुख होवे खूब सत्कार।

खटपट होवे समझ न आवे,
हो गए बाल-बच्चेदार।
रह-रहकर चिंता सतावे,
माँ-पिता का हो उद्धार।

ऊपर-ऊपर मीठी बोली,
भीतर-भीतर जहर घोली !
तभी तो भाई-भाई में,
उपजी भारी अपनापन की बाता।

लाख कीमती हो ममता की डोर,
फट गई सब हो गई भोर।
धन-दौलत एक बहाना है,
अब जुदाई एक निशाना है।

बंटवारे में तलख मिजाज,
एक इंच भी न छोड़ेंगे आज।
गाँव-ग्राम तमाशा देखे,
रही नहीं तनिक भी लाज।

फिर मिल बैठकर खायेंगे,
पर आज न दिल लगायेंगे।
फट गया तो फट गया,
आज न सी पायेंगे।

हो रही गद-गद बहुएं,
पूरी हुई मुराद आज।
भाई-भाई का मुंह फेरा,
बन गया सारा काज।

राष्ट्र धर्म

भारत माँ का लाल कहाने,
चोटी पर चढ़ जायेंगे।
नहीं किसी से कम रहेंगे,
नही अपमान सह पायेंगे।

राष्ट्र की रक्षा के खातिर,
बलि बेदी पर चढ़ जायेंगे।
सुन लो सारे देश के दुश्मन,
तेरे खून से नहलायेंगे।

राष्ट्र की गौरव गाथा को,
तनिक नहीं भूल पायेंगे।
जिस मिट्टी में जन्म लिया,
उसी का तिलक लगायेंगे।

दुश्मन के सिने पर चढ़कर,
दम भर सबक सिखायेंगे।
उठ सकेगा फिर कभी न,
वैसा पाठ पढ़ायेंगे।

हो जायेंगे कुर्बान वतन पे,
राष्ट्र धर्म निभायेंगे।
न कभी रुकेंगे, न कभी झुकेंगे,
दम पर दम लगायेंगे।

खौल उठेगा खून हमारा,
आँख कोई दिखलायेगा।
हम मिट्टी के लाल है,
मर कर भी तर जायेंगे।

बूंद-बूंद है खून शरीर में,
राष्ट्र को सिंच पायेंगे।
तन, मन और धन लगाकर,
सर्वस्य न्योछावर कर जायेंगे।

गाँधी, नेहरू और सुभाष को,
कभी नहीं भूल पायेंगे।
वीर सपूतों की गाथा का,
अमर संदेश सुनायेंगे।

सुन लो सारे मित्र हमारे,
कदम से कदम मिलायेंगे।
सिना तानकर बढ़ चलेंगे
रोक नहीं कोई पायेंगे।

दहल उठेगी दुनिया सारी,
हुंकार जब भर पायेंगे।
सत्य, अहिंसा की पाठ पढ़ेगी,
इतिहास जब दोहरायेंगे।

चरित्र बल है कितना भारी,
तौल कर देख लो ईमानदारी।
मनमोहन और लाल बहादुर,
संग में खड़े हैं कर्पूरी।

बाबा साहब से सिख पायेंगे,
संघर्ष के बल जीत जायेंगे।
कण-कण सारा खिल उठेगा,
बाधायेँ सब टल जायेंगे।

पाखण्ड

हल-चल मच गया तब,
उभरा भाव अन्दर से जब।
कुकृत्य की सीमा लाँघा,
बेसर्मी का फेटा बाँधा।

संस्कार का पाठ पढ़ानेवाला,
समझा नहीं दूसरों को सखा।
चोटी पर खुद को रखा,
जो आया मुंह में वहीं भक्खा।

कितना गम-खावोगे अब,
जन-जन तुझे घेरा है जब।
सहन शक्ति की एक सीमा है,
अमरत्व का नहीं कोई बीमा है।

सच्चाई प्रदर्शित करने का,
समय वो अब आ चला।
जीत जावोगे, समझ में आता है,
पर जो रचा, वो भाता है ?

जिस भाव के पर्वत पर बैठा,
क्या वो कभी ढह नहीं सकता ?
सूत्र अब बतलाना होगा,
पाखंड की गांठें खोलना होगा।

दृष्टांत खूब बतलावोगे,
पर क्या वो भाव अब पावोगे ?
सोचो क्यों अब वैसा होगा,
जब मूत्र गंगाजल से पवित्र होगा।

जिनकी कथा सुनाते हो,
उन्हीं का सिर मुंडवाते हो।
आखिर अपमान है किसका,
तुम्हीं तो सृजा है भाव जिसका।

जानता हूँ, तर्क पर तर्क भिडावोगे,
विश्वास के सामने टिक पावोगे ?
दोनो मे है दूरी जितनी,
कोई, माप सका है उतनी ?

अब तिलमिला उठे हो,
भाव पाने को रुठे हो।
पूछ लो रचने वाले को,
क्या है वो, अब पचने को ?

मानव प्रेम को ढक रखा,
केवल निजी स्वार्थ को परखा।
अदभुत ढोंग रचा कर,
दूसरों को केवल पाठ पढाया।

गाँठ अब खुलने वाला है,
एक नहीं सुनने वाला है।
नाश मनुज पर छायेगा,
कहर पर कहर बरपाएगा।

जैसी करनी वैसी भरनी,
सबको समझ में आयेगा।
कह नहीं सकता बचेगा कौन,
मिट कौन तब जायेगा।

लहू की बारी आई,
रुकना है की बहना।
छिड़ जायेगा गदर,
खून बनेगा झरना।

तल्लू हो उठी दुनिया सारी,
सुनकर तेरी करगुजारी।
पश्चाताप कहूँ या सीनाजोरी,
बचा है केवल बरियारी।

भूल न जाना ताना-बाना,
ऊँच-नीच है बहाना।
माप लेना दम लगाकर,
मानव प्रेम का ठिकाना।

धर काँप उठा फिर एक बार,
अनगिनत बीत चुका बारम्बार।
कितना सहूँ तुम्हीं बताव,
धर्म के बन बैठे हो ठिकेदार।

बहा न खून बहा न पसीना,
केवल गाल बजा कर सिखा है जीना।
बताव, अब क्या कहूँ तुझे,
जब है बचा, केवल मरना ही मरना।

दिशोम गुरु

जन-जन की आवाज़ बनकर,
संघर्ष के पथ पर चढ़कर।
तूने सब को ललकारा था,
अदभुत सबका प्यारा था।

लक्ष्य भेदनेवाला बनकर,
चला सदा सीना तानकर।
तूफान के साथ तू आँधी था,
शिवलाल नहीं तू गाँधी था।

दाढ़ी-बाल और मूँछ बढ़ाकर,
बाघ की तरह आँख दिखाकर।
जब तुम दहाड़ लगाया था,
धरती क्या अम्बर में शोर मचाया था।

बी०बी०सी० लंदन को सुनकर,
फैला नाम तेरा दुनिया में घर-घर।
राज्य क्या केन्द्र हिल उठा था,
चील बनकर मस्तक पर बैठा था।

निकला था तीर-धनुष लेकर,
कभी देखा नहीं मुड़कर।
नाकेबंदी एक आधार था,
कहने वालों के लिए व्यापार था।

निकल पड़ा था फ़ौज लेकर,
रोक सका न कोई धक्का देकर।
कह नहीं सका कोई कायर था,
सचमुच तू एक फायर था।

उभरा था तुम टीम बनाकर,
जब किया मुकाबला डटकर।
जब-जब कदम लडखड़ाया था,
सबने जोर लगाया था।

सदियों का संघर्ष मिलकर,
उभरा जब ताकत बनकर।
तूने राह बनाया था,
घर-घर अलख जगाया था।

वनवासी, आदिवासी के घर,
आया भूधरा पर जन्म लेकर।
शिवू नहीं तुम वीर था,
झारखण्ड का तकदीर था।

धान काटो अभियान चलाकर,
आदिवासियों में जोश जगाकर।
महाजनों को ललकारा था,
तभी सबने तुझे पुकारा था।

जंगल-जंगल खाक छान कर,
गुफाओं में छिप-छिपाकर।
अपने को बचाया था,
तभी तो कुछ कर पाया था।

लोटा, सोटा, झोंटा कहकर,
सन्मुख जा खड़ा हो कर।
बेखौफ़ तूने हडकाया था,
था नहीं कोई डट पाया था।

जल-जंगल जमीन बचाकर,
आदिवासियों को बेखौफ़ बसाकर।
जीने का गुर सिखाया था,
तभी चैन तुझे मिल पाया था।

आदिवासी हंडिया पीकर,
सुध-बुद्ध सारा खोकर।
तुझे नहीं समझ पाया था,
जबकि जीवन भर समझाया था।

क्षेत्र के लुटेरों को दीकू कहकर,
चप्पा-चप्पा उन्हें ढूँढकर।
जोर-शोर से भडकाया था,
भागे तो नहीं खौफ़ जरूर समाया था।

रहस्य

दुनिया की रीत जानें,
करीब से सबको पहचानें।
कौन कब और क्या है,
निभ जाये तब जानें।

कोई मिल जाते चलते-चलते,
कोई तो ढूँढने पर मिलते।
अरे, सबकी अपनी राहें,
चौराहों पर भटकते-भटकते।

धर्म-कर्म के हों पक्के,
संस्कार के बड़े अनोखे।
चलते हों सम्हल-सम्हल के,
पर खा जाते हैं धोखे।

टूट जाती है भ्रम जब,
बोल जाते हैं झूठे।
कहने को तो साधु-संत,
पर घोलते जहर हैं मीठे।

दुःख से कराहता जीवन,
पर भटके नहीं मना।
वही एक सहारा है,
जिसने सृजा है यह तना।

जीवन विकट जंगल है,
भटक जाते जिसमें हम।
मंजिल की पहचान नहीं,
बताव किसमें है दम ?

अँधेरी गली है जहाँ,
फँस जाते हैं वहाँ।
पूछो मत हम हैं कहाँ,
मिलते सुराग जहाँ के तहाँ।

विचलित हो कर रह जाते,
तनिक नहीं कुछ कर पाते।
खाते-पीते मौज मनाते,
भर जवानी सो जाते।

चारों पन की खुबियाँ,
हर कोई देख नहीं पाते।
सौभाग्य जिसका साथ देता,
वही पूरा कर पाते।

बड़ी यतन से पाला-पोसा,
भारी आस लगाके।
आया वक्त जब पाने का,
तब मिल गया जवाब तडके।

लोभ लालच में फँसा है,
जीवन यहाँ सबके।
पूछ लो तनिक उनसे,
जो निकल रहे हैं बचके।

बदलता गाया जीवन,
आते और जाते।
भरा भण्डार जीवन भर,
निकला पछताते-पछताते।

गजब है ये दुनिया,
शायद कोई समझ पाता।
ज्ञानियों की कमी नहीं,
पर रहस्य को छू नहीं पाते।

चलते लाख सम्हल-सम्हल के,
फिर भी फिसल जाते हैं।
कोई-कोई दुःख मनाते,
कोई तो मचल जाते हैं।

मानव का स्वभाव अनोखा,
तनिक में घुल-मिल जाते।
अपना पराया भेद नहीं,
धोखा क्यों खा जाते हैं ?

जवानी

बुलंदी के शिखर पर चढ़ कर,
देखो नहीं कभी पीछे मुड़कर।
काश ! गिर जाओगे एक बार,
रह जाओगे चुर-चुर होकर।

सपने संजोये हजार, मगर,
साकार हो न सका एक बार।
मिला मौका तो चूक न जाय,
कोसना पड़ेगा बारम्बार।

कौन नहीं करता तलाश मौके का,
मिल न सका तो कोसते फिर धोखे का।
उठाते कदम भले फूंक-फूंक कर,
कह नहीं सकते कभी खायेंगे ठोकर।

हर की इच्छा अपनी-अपनी,
राहें बनती हैं अनेक।
कोई गिरता, कोई उठता,
भले हो जाये बीच में भेंटा।

शिखर से भी ऊपर,
ढूँढ़ लो यदि है कोई।
पूछ लो पता ठीक से उसे,
मिल जाये तो नाप लो डगर।

दुनिया में आये हो,
जिओ बनकर अनोखा।
पछताना छोड़ दो,
कभी होगा नहीं धोखा।

समर में कूद पड़ते हैं,
परवाह नहीं जो करते।
है कोई, जो डरते हैं,
वो केवल दम भरते हैं।

आह नहीं कुछ पाने को,
चाह है केवल जीने को।
फिर बचा क्या पछताने को,
जब सच है केवल मरने को।

लोट-पोट है आस लगाये,
कोई भी तो कुछ दे जाये।
बैठे हैं दो हाथ मिलाये,
काश ! कोई कुछ दे पाये।

उन्माद फैलाने वाले,
मिल जाते चौक चौराहे।
चाहे जो कुछ हो जाय,
तनिक नहीं शरमाते।

जीवन की अंतिम घड़ी,
लग जाये जब हथकड़ी।
कौन कितनी दूरी पर,
रह गयी भीड़ खड़ी की खड़ी।

मचल जाती है जवानी एक बार,
टिक नहीं पाती खर पतवार।
जमीं से आसमां की ओर,
गर्जन-तर्जन हो घनघोरा।

कब्जा

फिर से फरमान है,
दिल में अरमान है।
भीड़ जायेंगे किसी से,
जिनके अन्दर गुमान है।

कहता फिर रहा,
किया न्योछावर सारा।
है दम किसी में नहीं,
जो बिगाड लेगा हमारा।

बन्धुवर ! बात बिल्कुल अच्छी है,
पर नीयत ओच्छी है !
अगर तुम सही हो,
तो कहने की नौबत क्यों आई है ?

सचमुच जिसने किया न्योछावर,
गौर नहीं किया तुम्हारे नीयत पर।
काश ! सोच लिया होता एक बार,
तुम यूँ ही पड़ा रह जाता लाचारा।

प्रकृति के मुफ्त उपहारों पर,
तुम जमा लिया कब्जा उस पर।
खुली आँखें सच्चे सेवकों की,
तिलमिला उठा तेरा घर-संसार।

जिसके बल तुम दम भरते हो,
उसी को दिल से पूजा करते हो।
सोचो, उसे सृजा है किसने,
जिससे तुम खुद कटते-भरते हो।

व्यर्थ राग अलाप रहे हो,
खाली हाथ आये हो।
खाली हाथ जाओगे,
फिर क्यों ललकार रहे हो ?

यदि बान्ध रखा है गाँठ मन में,
तो दौड़ोगे लेकर उसी को रन में।
भला जीत हार तो होगी ही,
पर फैलेगा विष कण-कण में।

मचल उठे हो खुद औठन पर,
दूसरों का उसपर ध्यान कहाँ।
निमग्न है राष्ट्र धर्म की सेवा में,
उसकी तुझे पहचान कहाँ।

अपने को तुम तौल-जोख कर,
बौखला रहे हो बेडहर।
जिस दिन बारी आयेगी,
आ जावोगे थाह पर !

असली ताकत की पहचान कर,
शायद तुम्हारे सन्मुख होगी।
रख देगा निर्माण कर,
उसी से निकलेगा मोखकर।

जिसको समझ कर निर्बल,
भर रहे हो हुंकार डटकर।
काश ! कभी जाग उठेगा,
हो जायेगा प्रलय भयंकर।

छल-प्रपंच का है भण्डार,
जिसके बल तुम हो तैयार।
सत्य निष्ठा पर है संसार,
टिकेगा, जिसमे है संस्कार।

व्यर्थ तुम ललकार रहे हो,
सत्य को धिक्कार रहे हो।
सोचो जिसकी कभी हार नहीं,
उसी पर तुम गुर्ग रहे हो।

धर्म-अधर्म की बारी है,
जिस पर सबकी तैयारी है।
जितना तुम भांज रहे हो,
बातों से केवल गांज रहे हो।

पता नहीं तुझे किसी का,
किसमें कितनी घुमारी है।
लगता है तुझे मैं जला डालूंगा,
पर तुमसे कहीं अधिक उसमे चिंगारी है।

कायर शोर मचाता है,
पग-पग ढोंग रचाता है।
जब कभी आ जाती बारी,
चुपके से दुबक जाता है।

अब आ चला है वक्रत जैसा,
तुमसे बेशी ललकार रहा।
तुम जितना मचल रहे हो,
तुम्हारे जेहन में वो धधक रहा।

बन्धुवर, अब वो दिन दूर नहीं,
मिट न जाये सिंदूर कहीं।
जैसा घमंड तुझ पर छा रहा,
संकट का बादल है मंडरा रहा।

उसे क्या जो मिट्टी में है मिला हुआ,
मिट भी जायेगा तो क्या होगा।
सोचना है केवल तुझे,
रख पावोगे की नहीं, है जो बचा हुआ।

बह चली हवा बेक्रार है,
होना मुफ्त में तकरार है।
रुक न सकेगा, बहुत हुआ,
आजमाने का इन्तजार है।

जन-जन के भीतर पक चुका,
सहने को है दिल अब थक चुका।
मिट जायेंगे तो गम नहीं,
सुन लो अब हम किसी से कम नहीं।

सोच लो एक बार ठहर कर,
तुम तो हो तैयार सज-धज कर।
प्राक्रम समझो उनका, जो,
रख दिया जखीरा निर्माण कर।

अंग-अंग सब कट जायेगा,
अग्नि बाण दिल में धंस जायेगा।
बच जायेगा करुण करन्दन,
वो भी अंत में मिट जायेगा।

बौखलाहट तेरी समझ में आती,
आखिर क्यों बौखला रहे हो।
समझ चुका तुम भली-भांति,
अब बोरिया-बिस्तर समेट रहे हो।

गौतम बाबू

अँधेरे में तीन प्रकाश,
गाँधी, लोहिया, जय प्रकाश।
संघर्ष से जब उपजा आस,
हुए आजाद बढ़ा विश्वास।

प्रजातंत्र है अपना राज,
तभी मिला शास्त्री को ताज।
राजेन्द्र को कहना क्या,
जिस पर टिका सारा नाज़।

कलाम और मनमोहन को देखो,
कैसा रहा इनका काज।
ज्ञान-विज्ञान का परचम लहरा,
शुभ संकेतों का हुआ आगाज।

ईमानदारी की चोटी पर,
दिखला दिया कर्पूरी चढ़ कर।
जात-पात से ऊपर उठ कर,
बैठता रहा कुर्सी पर डटकर।

कहाँ मिलेगा देखो ढूँढ़ कर,
लूट-खसोट है बढ़-चढ़कर।
जाति-धर्म प्रबल होकर,
बोल रहा सर पर चढ़कर।

गाँधी, लोहिया के अनुयायी बनकर,
जय प्रकाश को अगुआ मानकर।
जात धर्म का सहारा लेकर,
बढ़ रहा आज शोर मचाकर।

काश ! गाँधी होते आज,
कैसे बचती उनकी लाज।
गौतम सागर एक नमूना है,
जिसने मन में ठाना है।

जात-धर्म से ऊपर उठ कर,
प्रजातंत्र को पवित्र मान कर।
डटा हुआ है अपने पथ पर,
छोड़ दिया निर्णय जनता पर।

कुमार्ग पर कभी चढ़ा नहीं,
संकीर्णता की ओर बढ़ा नहीं।
काश ! वैसा कर पाता,
आज कहाँ से कहाँ होता।

अदभुत सोच निराली है,
त्याग अति बलशाली है।
कर मस्तक ऊँचा जिना सिखा,
हँस-हँसकर सब पीना सिखा।

हमजोली का टोली बनाकर,
उभरा आन्दोलन में कूदकर।
कर्तव्य पथ पर चलना सीखा,
कभी नहीं कहीं झुकना सीखा।

जय प्रकाश की आवाज है,
गौतम पर टिका वह लाज है।
लाख कोई परचम लहराया,
बेताज का सरताज है।

मिला न होता कोई मौका,
बात होती तब अनोखा।
भला जिनके हाथ खजाना,
फिर भी उसे कभी न छूना।

सास-बहू

सास-बहु का रिश्ता जब,
होता नहीं पुराना अब।
कहने को है बदल रहा,
पर अन्दर-अन्दर दहल रहा।

सास हो या बहु,
परस्पर तालीम का गुमान।
आखिर जब निरक्षर दोनों थे,
तब भी तो सब सिने थे।

कटुता पूर्ण भाव भरा,
सह लिया जब सारा का सारा।
दोनों हो गए महान,
बन गया उपमा का निशान।

उमड़-धुमड़ कर रह जाता,
भीतर-भीतर सब सड़ जाता।
क्योंकि बदल गया जमाना,
लड़ने का है नहीं बहाना।

कहता कौन है मिट गया करनामा,
लाख विद्वता उपजी हो।
समझो तनिक भी मर्जी हो,
फिर खुन्नस की क्या अर्जी हो।

बापू

गौण नहीं वह मौन है,
समझो वह कौन है ?
गुलामी की बेड़ी काटी,
विकल्प नहीं, समझो, तौन है।

छाया जिनकी मिटी नहीं,
मिट गई काया उनकी।
मानव बनकर आया था,
प्रेम भाव वर्षाया था।

धन्य था वह जीव,
सबमें जो समाया था।
आखिर थी कितनी शक्ति,
दुश्मनों को दहलाया था।

द्रविड़ हो कर ठान लिया,
सूट-बूट को त्याग दिया।
मानव नहीं वह देव था,
सचमुच में सत्यमेव था।

चप्पा-चप्पा पैदल पांव,
रुकता जहाँ मिलता छांव।
देश का जब कोना-कोना,
जाग उठा फिर क्या कहना।

राग अलाप रहा था तब,
छोड़ कर भागो देश को अब।
तिल भर नहीं है जगह तुम्हारा,
खिल उठा जब एक ही नारा।

कद लम्बा पद खाली था,
हाथ में लाठी, होठ पर लाली था।
न तलवार न भुजाली था,
सत्य-अहिंसा दो नाली था।

कहाँ गया वह मानव,
मचल रहे सब दानव।
पता नहीं अब क्या होगा,
आपस में निकल रहे जब तेगा।

सोचकर देखो क्या था उसमें,
था नहीं पद लोलुपता जिसमें।
आखिर वह पद है कौन,
अमरत्व दिला गया है जौन।

तरस उठी है दिल की दुनिया,
आवोगे कब फिर से हियाँ।
क्या कह कर पुकारूँ तुझे,
आकर कर दो दूर कमियाँ।

गजब थी तुम्हारी भुजा,
फिर न कोई वैसा उपजा।
रोम-रोम में भक्ति सृजा,
राष्ट्र मुक्त हो, यही था सुझा।

धन्य थी तुम्हारी काया,
जिसमें मैं था त्याग समाया।
वीरों में थे वीर अनेक,
पर नहीं वैसा कर पाया।

विश्व शांति आधार बनाया,
दुनिया को एक राह दिखाया।
डगमग-डगमग डोल रहा,
अब थाम्ह लो सब बोल रहा।

तडपन बेशुमार है

कूद पड़ो अब समर में,
बेसब्री से इन्तजार है।
फिर से तुम्हें फसाने को,
महाजल तैयार है।

काट सकोगे तो देख लो,
धैर्य का इन्तजार है।
सहा है, सह रहा, सहोगे.
तडपन बेशुमार है।

था जमाना सह लिया,
अब तो बेकार है।
क्यों डर रहे हो तुम,
निर्भीकता का संसार है।

उसका क्या कसूर है,
खून का था चस्का लगा।
दम पर दम लगाना होगा,
वो तो भिड़ने को तैयार है।

करवटें बदलती है दुनिया,
सम्वहलना तो होगा ही।
कोई लाख चाह ले,
नीचे से ऊपर होगा ही।

भोलापन का उठा मजाक
वीरों ने है पहना ताज।
जिसने पुरा कर पाया काज,
उसी पर है दुनिया का नाज़।

सोच-सोचकर बैठे हो,
व्यर्थ में तुम रूठे हो।
पैदा कर गर्मी खून में
जीत जाओगे तुम रन में।

संघर्ष का दौर है,
देशद्रोही महापौर है।
निपटोगे कैसे, समझो,
काँटों से भरा छौर है।

तलवारों से तब डरता था,
मिसाइलों का आज दौर है।
बांध लो कफन डटकर,
फिर नहीं आगे कुछ और है।

लिया है जन्म जब एक बार,
पूजे जाओगे बारम्बार।
पर जौहर तो दिखलाना होगा,
कोख का लाज बचाना होगा।

मर-मिट जाओगे वतन पे,
घर आंगन में खुशियाँ होंगी।
अमर हो जाओगे जगत में,
गाती सारी पीढ़ियाँ होगी।

टेक लो मंसूबे गजब का,
दिखला दो खेल अजब का।
तनिक नहीं संकोच कर अब,
मिटा दो साहस जमीर लूटने का।